वर्ष 65 अंक 1-2
ISSN 2231-2439
जनवरी-जून 2021

प्रौढ़ शिक्षा

प्रौढ़, सतत एवं आजीवन शिक्षा जगत का मुख पत्र

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

1939 में स्थापित भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ का उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि करना है, जिसे यह निरंतर तथा आजीवन प्रक्रिया के रूप में देखता है। संघ प्रौढ़ शिक्षा को एक प्रक्रिया, कार्यक्रम और आन्दोलन के रूप में गतिशील बनाने की दिशा में प्रतिबद्ध है। संघ शिक्षा के प्रसार में कार्यरत स्वयसेवी संगठनों, विश्वविद्यालयों, शासकीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के कार्यकलापों में समन्वय करता है। संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का आयोजन और प्रौढ़ शिक्षा के विभिन्न आयामों पर निरंतर सर्वेक्षण तथा शोध के साथ, संघ अपने सदस्यों की प्रौढ़ शिक्षा तथा आजीवन अधिगम विषयक जानकारी में नवीनता एवं प्रखरता बनाए रखने के लिए समूचे विश्व में अद्यतन विचार और अनुभव प्रस्तुत करने का सतत् प्रयत्न करता रहता है। प्रौढ़ शिक्षा के विविध क्षेत्रोंमें अनुसंधान हेतु विभिन्न प्रयोगात्मक परियोजनाएं भी संचालित करता है। अपनी नीतियों के अनुसरण में संघ ने प्रौढ़ शिक्षा में उत्कृष्ट कार्य हेतु 'नेहरू साक्षरता पुरस्कार' एवं 'टैगोर साक्षरता पुरस्कार' की स्थापना की है।

डा. जाकिर हुसैन स्मृति व्याख्यान प्रतिवर्ष किसी मूर्धन्य शिक्षाविद् द्वारा दिया जाता है। संघ हिन्दी और अंग्रेजी में शोध कार्य के लिए डा. मोहन सिंह मेहता फेलोशिप भी प्रदान करता है। संघ का अमरनाथ झा पुस्तकालय प्रौढ़, सतत् और जनसंख्या शिक्षा की संदर्भ सामग्री की दृष्टि से देश में अद्वितीय है। विविध संदर्भ–पुस्तकों के संकलन के अतिरिक्त देश और विदेश से प्रकाशित प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन अधिगम संबंधी पत्र–पत्रिकांए, सूचना एवं सदर्भ सामग्री भी संघ के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य हेतु संघ की पहल पर प्रौढ़ एवं जीवनपर्यन्त शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान (इंटरनेशलन इंस्टीट्यूट ऑफ एडल्ट एंड लाईफलॉंग एजूकेशन) की स्थापना वर्ष 2002 में हुई। संघ प्रौढ़ शिक्षा और आजीवन अधिगम विषय पर पुस्तकें तथा पत्रिकाएं प्रकाशित करता है, जो कि मुख्यतः प्रौढ़ शिक्षा कर्मियों और उसमें रुचि रखने वाली संस्थाओं और व्यक्तियों के लिए है। संघ 'इंटरनेशलन फेडरेशन आफ वर्कर्स एजूकेशन एसोसिएशन्स', एवं एशियन साउथ पैसेफिक एसोसिएशन फॉर बेसिक एण्ड एडल्ट एजूकेशन', 'इंटरनेशनल कौंसिल आफ एडल्ट एजूकेशन तथा 'इंटरनेशनल रीडिंग ऐसोसिएशन' से भी सम्बद्ध है। संघ की सदस्यता उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के लिए खुली है, जो इसके आदर्शों एवं लक्ष्यों में विश्वास रखते हैं और इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए इच्छुक हैं।

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

17–बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, महात्मा गांधी मार्ग, नई दिल्ली–110002

दूरभाषः 011–23379282, 23378436, 23379306

फैक्सः 011–23378206, ई–मेलः directoriaea@gmail.com

website: www.iaea-india.org; www.iiale.org

प्रौढ़ शिक्षा

जनवरी–जून 2021
वर्ष 65 अंक 1–2

सम्पादक मण्डल

प्रो. भवानीशंकर गर्ग
(संरक्षक)
श्री एम.एस. राणावत
(अध्यक्ष)
डा. सरोज गर्ग
श्री मृणाल पंत
श्री ए.एच.खान
श्री राजेन्द्र जोशी
सुश्री निशात फारूख

प्रधान संपादक
श्री कैलाश चौधरी

सम्पादक
श्री एस.सी. खंडेलवाल

सहायक सम्पादक
बी. संजय

इस अंक में

सम्पादकीय

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन
– रचना राठौड़ 4

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण से शिक्षक एवं छात्रों की अधिगम वृद्धि एवं समस्याएं
– एकता पांडेय 12

कोरोना का शिक्षा एवं समाज पर प्रभाव
– हरे कृष्ण 18

यादगार अनुभव, बदलता दृष्टिकोण
– सबा 24

आचार्य विनोबा भावे के दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा
– शैलजा मिश्रा 25

गिजुभाई की 'एकल शिक्षक पद्धति की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता'
– अस्मा 41

मूल्यः रूपये 200/–वार्षिक

पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचार उनके वैयक्तिक विचार हैं, जिनके लिए संघ एवं सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है ।

महामारी के दौरान शिक्षा सांतत्य पर गौर करने की आवश्यकता

कोविड–19 ने सन् 2019 के आखिरी महीनों में ही अपना पैर पसारना प्रारंभ कर दिया था। लेकिन विश्व स्वास्थ संगठन ने मार्च 2020 को आधिकारिक रूप से इसे एक महामारी के रूप में घोषित किया। तब से अब तक समूचा विश्व इस महामारी के भयावह दंश को झेल रहा है। भारत एक बड़ी आबादी वाला देश है जो मात्र कुछ दशकों पहले अपने नागरिकों की मौलिक आवश्यकताओं यथा भोजन और आवास को पूरी करने की जद्दोजहद कर रहा था। ऐसे में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य मूलभूत संरचनाओं का सम्यक विकास हो पाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। स्वाभाविक ही देश तीव्र गति से फैल रहे इस अदृश्य किन्तु भयानक महामारी का सामना करने के लिए किसी भी दृष्टि से तैयार नहीं था। महामारी की पहली लहर को देश ने आपातकालीन लॉक डाउन को माध्यम बनाकर लड़ा। लेकिन दूसरी लहर ने समूचे देश को झकझोर कर रख दिया। शहर–शहर, गांव–गांव चारों ओर मौत के आगोश में जा रहे लोगों का तांता लगा रहा। सब कुछ मानो बिखर सा गया। हर व्यक्ति एक अनहोनी की आशंका में जी रहा था। ऐसे में शिक्षा को प्राथमिकता दे पाने की कोशिश अत्यंत क्षीण होती दिखती रही। विद्यालयों के साथ सारे शैक्षिक संस्थान अब तक बंद हैं। वे कब खुलेंगे इसकी भी कोई निश्चित रूप रेखा मौजूद नहीं है। केन्द्र सरकार ने 12 वीं के बोर्ड की परीक्षा भी रद्द कर दी है। परिस्थिति अत्यन्त गंभीर है।

गौरतलब है कि सन् 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 5 से 24 आयु वर्ग की आबादी 43 प्रतिशत थी। तब देश की कुल आबादी 1210.2 मिलियन थी। अर्थात विद्यालय से लेकर उच्च शिक्षा संस्थानों में नामांकन योग्य संख्या 520 मिलियन होती है। वर्तमान में देश की अनुमानित जनसंख्या लगभग 1391.2 मिलियन है और इस प्रकार नामांकन योग्य छात्रों की संख्या 598.2 मिलियन हो जाती है। भारत सरकार के आंकाड़ों के अनुसार विद्यालय में नामांकित छात्रों की संख्या 260 मिलियन तथा उच्च शिक्षा क्षेत्र में नामांकित छात्रों की संख्या 31.5 मिलियन है। प्रश्न उठता है कि 291.5 मिलियन इन छात्रों के शैक्षिक जरूरतों को कैसे पूरा किया जाय? विकल्प के तौर पर ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षा प्रदान करना हीं एकमात्र कारगर उपाय दिखता है। यद्यपि इस माध्यम की भी कई खामियां हैं पर अधिकांश चुनौतियों का निराकरण करते हुए यह माध्यम शिक्षा के सांतत्य को बनाए रखने में सक्षम है। इसलिए यह देखना आवश्यक हो जाता है कि नामांकित छात्रों में ऑनलाइन शिक्षा तक कितनों की पहुंच हो पा रही है।

स्वतंत्र माध्यमों द्वारा की गयी एक अध्ययन के अनुसार देश में लगभग 60 मिलियन छात्र स्वयं के मोबाइल अथवा अपने अभिभावकों के मोबाइल के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त

करने में आंशिक या पूर्ण रूप से सक्षम हैं। यदि बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी उपलब्ध हो तो ये छात्र ऑनलाइन माध्यमों द्वारा अपनी शिक्षा को आगे ले जा सकते हैं। लेकिन तब भी 231.5 मिलियन छात्र किसी भी प्रकार से नियमित शिक्षा प्राप्त करने के दायरे से वंचित रह जाते हैं जो निश्चित रूप से उनके निजी विकास के साथ–साथ देश के बहुमुखी विकास और सबल तथा सुरक्षित भविष्य के लिए एक गंभीर चुनौती है।

यह ठीक है कि सरकार ने ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को गुणवत्तापूर्ण सामग्री उपलब्ध कराने के लिए अलग–अलग स्तरों पर कई प्रयास किये हैं जिसके कारण ई–पाठशाला, स्वयम (SWAYAM), दीक्षा (DIKSHA), मूक (MOOCs), आदि संसाधन केन्द्र आज छात्रों को सहज सुलभ हैं पर मुख्य चुनौती ऑनलाइन शिक्षा के व्याप को बढ़ाने की है। एक अध्ययन के अनुसार 2021 तक विद्यालयों में नामांकित छात्रों की संख्या 280 मिलियन हो जायेगी। अतः उच्च शिक्षा को शामिल करने पर नामांकित छात्रों की संख्या 311.5 मिलियन हो जायेगी और ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्राप्त न कर पाने वाले छात्रों की संख्या लगातार बढ़ती जायेगी। ऐसे में महामारी से बचाव के साथ हीं शिक्षा के सांतत्य और उपलब्धता पर भी गौर करने की आवश्यकता अनिवार्य जान पड़ती है।

– बी.संजय

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

– रचना राठौड़

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य का मुख्य लक्ष्य सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना था। शोधार्थी द्वारा चित्तौड़गढ़ जिले की कपासन तहसील के 10 विद्यालयों से कुल 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। दत्त संकलन के पश्चात् उनका सारणीयन करते हुए आँकड़ो के विशलेषण हेतु, मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण, एवं आरेख प्रदर्शन का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सार्थक अन्तर पाया गया है।

अधिकतर सोशल मीडिया माध्यमों के द्वारा उपयोगकर्ता अपनी व्यक्तिगत पहचान के विभिन्न आयामों को अपने प्रोफाइल में उजागर कर सकता हैं। अपनी पसन्द–नापसन्द, अपने विचारों को अपने विभिन्न समूहों के सदस्यों तक पहुँचा सकता है। वे छात्र जो नवीन सूचनाओं के प्रति जागरूक हैं, अपनी सूचना की उपयुक्तता का मूल्यांकन कर सकते हैं। इसी के साथ अधिकांश लोगों को सोशल मीडिया आसान सम्पादन, अपनी प्राथमिकताओं का पूर्नमूल्यांकन तथा अपनी रूचि और लक्ष्य को बेहतर ढ़ंग से जानने का अवसर प्रदान करती हैं। सोशल मीडिया का यही लचीलापन उसकी बढ़ती लोकप्रियता का एक कारण हैं। वर्तमान में प्रौद्योगिकी क्षेत्र में हो रहा व्यापक विस्तार सोशल मीडिया की सीमाओं को भी और अधिक विस्तृत करता जा रहा हैं।

सोशल मीडिया विश्व बंधुत्व एवं वैश्वीकरण के क्षेत्र में ईंधन का कार्य करता हैं। इसके द्वारा ऑनलाइन संवाद संचार के पारम्परिक तरीकों के लिए एक नई चुनौती खड़ा किया जा रहा हैं। सोशल मीडिया से औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले संभावित लाभ लगातार उभर कर समाज के सामने आ रहे हैं।

उन्नति के लिए आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अध्ययन अनिवार्य हैं। ऐसे में शैक्षिक क्षेत्र अध्ययन से कैसे वंचित रह सकता हैं। यहां भी उत्तम शैक्षिक उपलब्धि के लिये विद्यार्थियों द्वारा अपने ज्ञान को निरन्तर बढ़ाने के लिये सतत् अध्ययन करने की आवश्यकता हैं। साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि अध्यापकों की अध्ययन आदतें उचित हो, वे पढ़ने और पढ़ाने के शौकिन हो तथा विद्यार्थियों में अध्ययन संबंधी आदतें विकास करने की प्रेरणा देते रहें और भविष्य की तैयारी के लिये उपयुक्त आधार प्रदान करें।

विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थियों का प्रमुख कार्य अध्ययन करना हैं। प्रत्येक विद्यार्थी अच्छे अंको से उत्तीर्ण हो सके इसके लिए यह आवश्यक हैं कि उसकी अध्ययन आदतें अच्छी हों। पर सोशल मीडिया के लगातार प्रयोग के कारण कई विद्यार्थी अपना गृहकार्य पूरा नहीं कर पाते हैं। इतना ही नहीं कई विद्यार्थी तो सुबह जल्दी उठने से भी कतराने लगते हैं। ऐसे में सुबह अध्ययन करना दूर की बात हो जाती है। इस प्रकार सोशल मीडिया लगातार विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों को भी प्रभावित कर रहा है।

उद्देश्य

- सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

- सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का अध्ययन करना।

- सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्राकल्पना

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नही हैं।

अनुसंधान का विधिशास्त्र

- प्रस्तुत शोध में शोध की प्रकृति को देखते हुए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया।
- दत्त संकलन हेतु डॉ. डी.एन सनसनवाल एवं डॉ. एम. मुखोपाध्याय द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है।

सारणी 1

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का मध्यमानवार विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र का नाम	कथन संख्या	कटपॉइन्ट	मध्यमान
1.	समझने की योग्यता	12	$12 \times 2 = 24$	39.11
2.	एकाग्रता	10	$10 \times 2 = 20$	20.21
3.	कार्य अभिविन्यास	9	$9 \times 2 = 18$	19.21
4.	अध्ययन सैट्स	7	$7 \times 2 = 14$	20.55
5.	अन्तर्क्रिया	3	$3 \times 2 = 6$	10.00
6.	अभ्यास	4	$4 \times 2 = 8$	10.66
7.	सहारा देना	4	$4 \times 2 = 8$	12.88
8.	अभिलेखन करना	2	$2 \times 2 = 4$	7.18
9.	भाषा	1	$1 \times 2 = 2$	4.00

आलेख 1

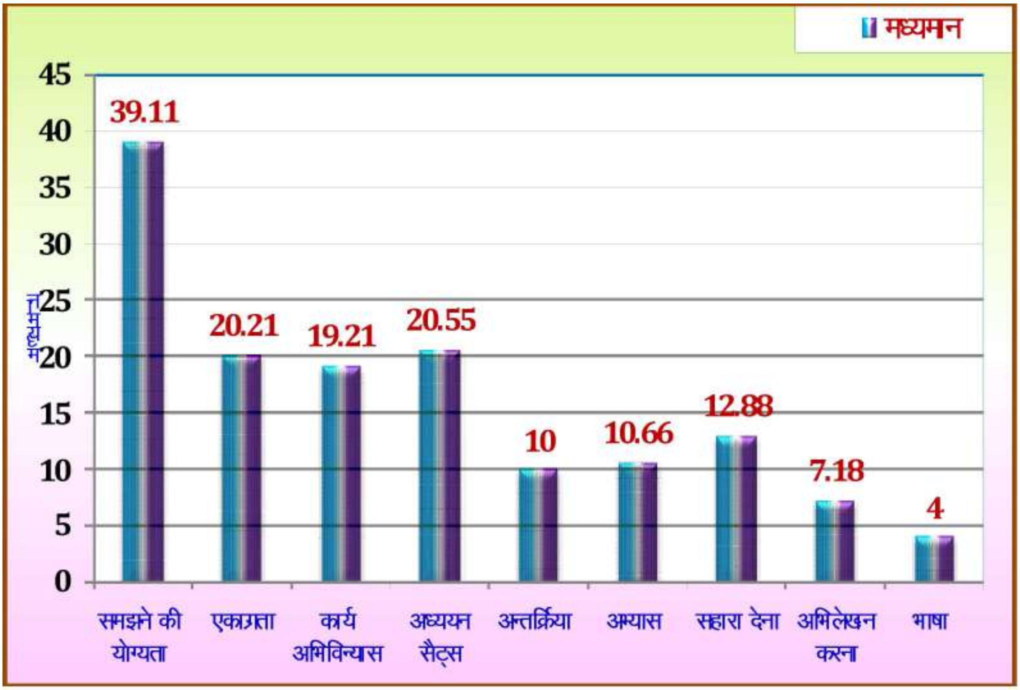

सारणी 2
सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का मध्यमानवार विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र का नाम	कथन संख्या	कटपॉइन्ट	मध्यमान
1.	समझने की योग्यता	12	$12 \times 2 = 24$	42.10
2.	एकाग्रता	10	$10 \times 2 = 20$	23.20
3.	कार्य अभिविन्यास	9	$9 \times 2 = 18$	22.20
4.	अध्ययन सैट्स	7	$7 \times 2 = 14$	23.54
5.	अन्तर्क्रिया	3	$3 \times 2 = 6$	12.99
6.	अभ्यास	4	$4 \times 2 = 8$	13.65
7.	सहारा देना	4	$4 \times 2 = 8$	15.87
8.	अभिलेखन करना	2	$2 \times 2 = 4$	10.17
9.	भाषा	1	$1 \times 2 = 2$	6.99

उपरोक्त सारणी के आँकड़ो का अवलोकन करने से निम्न परिणाम परिलक्षित होते हैं

आलेख 2
सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का मध्यमानवार विश्लेषण

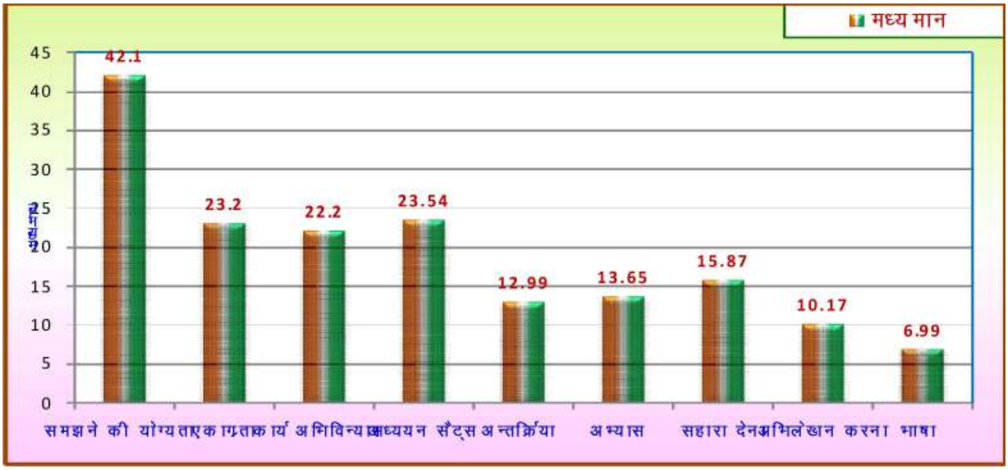

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का मध्यमानवार विश्लेषण

उपरोक्त सारणी के आँकड़ो का अवलोकन करने से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं जिन्हें क्षेत्रवार लिखा गया है :

1. **समझने की योग्यता** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र समझने की योग्यता पर प्राप्तांकों का मध्यमान 42.10 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 12´2=24 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी समझने की योग्यता रखते हैं।
2. **एकाग्रता** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र एकाग्रता पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 23.20 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 10´2=20 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी एकाग्रता संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।
3. **कार्य अभिविन्यास** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र कार्यअभिविन्यास पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 22.20 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 9´2=18 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी कार्य अभिविन्यास संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।
4. **अध्ययन सैट्स** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र अध्ययन सैट्स पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 23.54 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 7´2=14 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी अध्ययन सैट्स संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।
5. **अन्तर्क्रिया** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र अन्तर्क्रिया पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 12.99 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 3´2=6 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी अन्तर्क्रिया संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।

6. **अभ्यास** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र अभ्यास पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 13.65 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान से 4´2=8 अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी अभ्यास संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।

7. **सहारा देना** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र सहारा देना पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 15.87 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 4´2=8 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी सहारा देना संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।

8. **अभिलेखन करना** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र अभिलेखन करना पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 10.17 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 2´2=4 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी अभिलेखन करना संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।

9. **भाषा** : सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का पता लगाने हेतु मानकीकृत प्रमापनी के क्षेत्र भाषा पर प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 6.99 प्राप्त हुआ जो कि इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 1´2=2 से अधिक हैं अर्थात् सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थी भाषा संबंधी आदतें अच्छी पाई गई।

सारणी 3

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय व निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का मध्यमानवार तुलनात्मक विश्लेषण

क्र.सं.	क्षेत्र	मध्यमान		मानक विचलन		टी—मान	05 / .01 पर सार्थकता
		राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों	निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों	राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों	निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों		
1.	समझने की योग्यता	39.11	42.10	8.52	11.79	2.06	0.01 स्तर पर सार्थक हैं।
2.	एकाग्रता	20.21	23.20	5.74	5.90	3.63	
3.	कार्य अभिविन्यास	19.21	22.20	5.61	6.22	3.57	
4.	अध्ययन सैट्स	20.55	23.54	5.81	6.61	3.40	
5.	अन्तक्रिया	10.00	12.99	2.13	3.25	7.69	
6.	अभ्यास	10.66	13.65	2.50	3.72	6.67	
7.	सहारा देना	12.88	15.87	3.10	4.20	5.73	
8.	अभिलेखन करना	7.18	10.17	2.10	2.81	8.52	
9.	भाषा	4.00	6.99	1.23	2.08	12.37	

कत्रि 198 के सारणीमान 0.05 स्तर पर सारणीमान – 1.97 0.01 स्तर पर सारणीमान – 2.60

आरेख 3

सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले राजकीय व निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों के अध्ययन आदतों का मध्यमानवार तुलनात्मक

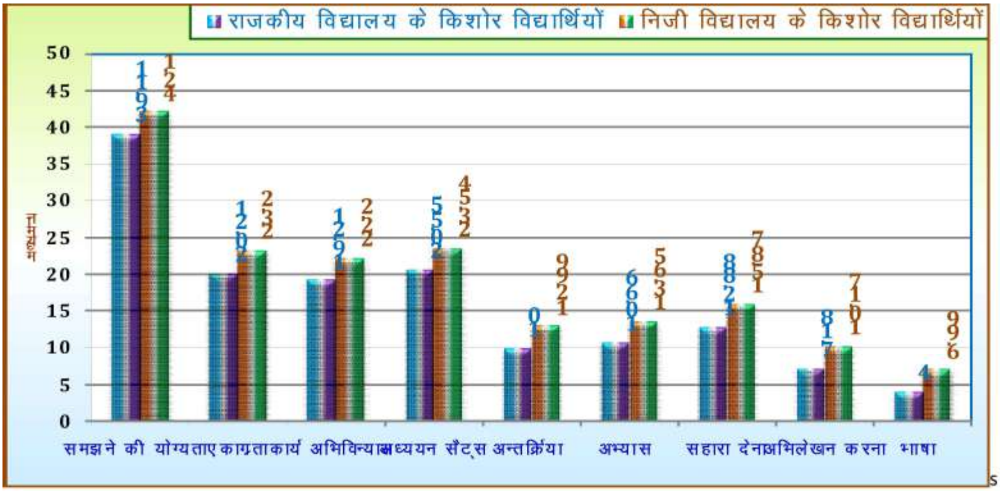

विश्लेषण

- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में समझने की योग्यता कम रखते हैं।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में एकाग्रचित होने का कम प्रयास करते हैं।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में कार्य अभिविन्यास संबंधी अध्ययन आदतें कम पाई गई।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अध्ययन सैट्स संबंधी अध्ययन आदतें कम पाई गई।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अन्तक्रिया संबंधी अध्ययन आदतें कम पाई गई।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अभ्यास कम करते हैं।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में सहारा देना संबंधी अध्ययन आदतें कम पाई गई।
- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में अभिलेखन कम करते हैं।

- राजकीय विद्यालय के किशोर विद्यार्थी निजी विद्यालय के किशोर विद्यार्थियों की तुलना में भाषा में लिखकर कम याद करते हैं।

वर्तमान में प्रासंगिकता

प्रस्तुत आलेख के द्वारा राजकीय व निजी विद्यालय में अध्ययनरत सोशल मीडिया का अधिक उपयोग करने वाले विद्यार्थियो की अध्ययन आदतों के बारे में जानकारी प्राप्त कर उसके अनुरूप शिक्षक उनके निर्देशन व शिक्षण प्रदान कर सकते है।

सन्दर्भ

1. अस्थाना, बिपिन : ''मनोविज्ञान व शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा।
2. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. (1978) : ''रिसर्च इन एज्यूकेशन'', प्रेन्टिसहॉल ऑफ इण्डिया प्रा. ल, नई दिल्ली।
3. भटनागर, सुरेश (1995) : ''शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान।''
4. भार्गव महेशचन्द्र (1984) : ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'', हर प्रसाद भागर्व, आगरा।
5. बोर्ग, डब्ल्यू. आर. (1963) : ''एजूकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोड्क्शन'', लॉगमांस ग्रीन एण्ड लिमिटेड, न्यूयॉर्क।
6. कोल, लोकेश (1998) : ''शैक्षिक अनुसंधान की विधि'', विकास प्रकाशन हाऊस प्रा. लि., नई दिल्ली।
7. दत्ता, संजय (2005) : ''शिक्षा मनोविज्ञान में अधिगम एवं व्यक्तित्व'', जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर।
8. ढोढियाल एवं फाटक (1959) : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
9. कपिल, एस. के. (1975) : ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
10. कपिल, एच. के. : ''असामान्य मनोविज्ञान'', एच. पी. भार्गव, बुक हाउस, आगरा।

हम वस्तुतः शिक्षित हैं कि नहीं, इसका निर्णय हमारे डिग्री, डिप्लोमा नहीं कर सकते। इसका निर्णय करने के लिए हमें सर्वप्रथम शिक्षा के अर्थ, स्वरुप एवं उदेश्य को समझना होगा। यदि हमारी शिक्षा इस कसौटी पर सही उतरती है तो हम शिक्षित कहे जा सकते हैं अन्यथा तो हम तथाकथित शिक्षित होकर भी अशिक्षित ही हैं।

शिक्षा वह नहीं है जो व्यक्ति सीखता है बल्कि वह क्या बनता है, वहीं शिक्षा है।

–स्वामी विवेकानन्द

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण से शिक्षक एवं छात्रों की अधिगम वृद्धि एवं समस्याएं

– एकता पांडेय

इस अध्ययन का उदेश्य वैश्विक महामारी के काल में ऑनलाइन कक्षाओं के कारण शिक्षक और छात्रों की अधिगम में वृद्धि, उनके अध्ययन के समय में कमी अथवा वृद्धि और ऑनलाइन शिक्षण से होने वाली समस्यओं के बारे में जानकारी हासिल करना है। इस महामारी के दौरान भारत में पठन–पाठन के कार्य को सुचारु ढंग से चलाए रखने के लिए शिक्षा प्रणाली द्वारा ऑनलाइन माध्यम से कक्षाओं का आयोजन किया गया। इस दौरान छात्रों और शिक्षकों को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ा, क्या छात्रों के अधिगम में ऑनलाइन माध्यम से वृद्धि हुई और क्या छात्रों ने ज्यादा रूचि से ज्यादा समय तक अध्ययन किया। इन प्रश्नों का उत्तर जानना वांछनीय है। ऑनलाइन कक्षाओं में तकनीकि शिक्षा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अतः ऑनलाइन कक्षाओं में अधिगम में वृद्धि और समस्याओं के अध्ययन से पहले सूचना और संचार तकनीकि के महत्व को समझना आवश्यक हैं।

सूचना और संचार तकनीकि का महत्व

आज के वर्तमान समय में औद्योगिक नवचारों के साथ तालमेल रखने और तकनीकि प्रगति की गति को तेज करने की बहुत आवश्यकता है, लेकिन तेजी से हो रहे विकास के इस युग में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना तथा पारंपरिक कक्षा विधियों का उपयोग करके सभी के लिए शिक्षा प्रदान करना बहुत ही कठिन कार्य हो गया है। आईसीटी के क्षेत्र में हो रहे नए विकास के कारण कक्षा की चार दीवारों के बाहर शिक्षण और सीखने की नई संभावनाएँ विकसित हुई है।

आज इन उभरती हुई सूचना और संचार तकनीकियों के कारण शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया पहले से कहीं ज्यादा व्यापक हो गई है। शिक्षार्थी–केंद्रित इस पद्धति में शिक्षक–केंद्रित निर्देश की तुलना में रचनात्मक, सृजनात्मक चिंतन एवं सीखने के वातावरण पर अधिक जोर दिया जाने लगा है। आज के शिक्षण में शिक्षार्थी अपने ज्ञान का निर्माण स्वयं करने की कोशिश करता है। शिक्षक मात्र एक सहायक की भाँति शिक्षार्थी की मदद करता है। इस कारण शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में धनात्मक परिवर्तन आया है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का उपयोग एक महत्वपूर्ण औजार की भाँति शिक्षण और अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर रहा है।

सूचना और संचार तकनीकि के महत्व को देखने के बाद अब ऑनलाइन शिक्षण का प्रचलन प्रारंभ हो गया है। ऑनलाइन शिक्षा दो तरह से आयोजित की जाती है। पूर्व से ही रिकार्ड की गई कक्षाओं के माध्यम से एवं दूसरा लाइव वेबिनार, या जूम सेशन के रूप में

आयोजित कक्षाओं के माध्यम से। छात्रों को इन सत्रों में भाग लेने या पूर्व–रिकार्ड की गई कक्षाओं को देखने के लिए हाई–स्पीड इंटरनेट और कप्यूटर/मोबइल की भी आवश्यकता होती है।

भारत में ऑनलाइन शिक्षा को सक्षम करने के लिए कई मंच बनाए गए हैं। ये मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और तकनीकि शिक्षा विभाग द्वारा समर्थित है। ई–पीजी पाठशाला (ई–सामग्री), SWAYAM (शिक्षकों के लिए ऑनलाइन पाठयक्रम) और NEAT (रोजगार बढ़ाने) जैसी पहल भी हैं। अन्य ऑनलाइन प्लेटफार्मों का उद्देश्य संस्थानों के साथ संपर्क बढ़ाना और सामग्री तक पहुँच बनाना है। ये पाठयक्रम सामग्री और कक्षाओं और ऑनलाइन मॉडयूल के चलने के लिए उपयोग किए जाते है। वे अन्य लोगों के साथ राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी सवंर्धित अध्ययन (एन.पी.टी.ई.एल.) राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क, (एन के एन), और राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॅाजिटरी (एन.ए.डी.) को शामिल करते हैं।

हालांकि, वर्तमान महामारी COVID-19 के कारण उत्पन्न स्थिति के मद्देनजर ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षा किसी भी देश के लिए एक अनिवार्यता बन गई है। विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन कक्षाओं के संचालन को शैक्षिक बोर्डों द्वारा अनिवार्य किया गया है। COVID-19 ने न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में शैक्षणिक व्यवस्था को व्यापक बदलाव की ओर उन्नमुख किया है। भारत के साथ–साथ दुनिया भर के विद्यालयों ने भौतिक कक्षाओं को निलंबित करते हुए उन्हें आभासी कक्षाओं में स्थानांतरित कर दिया है।

भारत में ऑनलाइन शिक्षा

ऑनलाइन शिक्षा और कक्षाएं तेजी से दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बन रही हैं। ऑनलाइन चैनल ने शिक्षा को सुविधाजनक और आसानी से सुलभ बना दिया है। भारत में शिक्षा क्षेत्र एक निरंतर बढ़ती इकाई रहा है। उच्च शिक्षा की बात करें तो भारत दुनिया के सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक रहा है। हालंकि ऑनलाइन और डिस्टेंस लर्निंग कोर्स लंबे समय से भारत में सभी जगह कराये जा रहे हैं और बहुत ही सफल भी रहे हैं। भारतीय शैक्षिक प्रणाली में कक्षा में आमने–सामने के अध्ययन और अध्यापन को हमेशा से सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जाती रही है।

भारत में ऑनलाइन शिक्षा का COVID-19 महामारी के दौरान एक नया ही रूप सामने आया है। ऑनलाइन शिक्षण के कारण शिक्षकों और छात्रों की अधिगम वृद्धि में एक नयी क्रांति का संचार हुआ है। विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों द्वारा अलग–अलग स्तरों पर देश में कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन कार्यशालाओं, सेमिनारों का आयोजन किया गया है जो छात्रों और शिक्षकों दोनों के अधिगम वृद्धि के लिए बहुत ही

महत्वपूर्ण साबित हुई हैं। लॉकडाउन के कारण जब प्रत्यक्ष रूप से किसी आयोजन अथवा समारोह में उपस्थिति होना संभव नहीं था तब भी ऑनलाइन शिक्षण माध्यमों के कारण घर में रहकर आसानी से छात्रों और शिक्षकों के ज्ञान में वृद्धि हो सकी।

भारत में COVID-19 महामारी ने स्कूलों की सामान्य कक्षाओं को भी ऑनलाइन कक्षाओं में स्थानांतरित कर दिया है। नतीजतन, पूर्व–प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा के सभी चरणों की जरूरतों को पूरा करते हुए, ऑनलाइन शिक्षा आमने–सामने की कक्षाओं के लिए एक विकल्प के रूप में उभरी है। अतः विभिन्न सरकारी और निजी संगठन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का उपयोग करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करके एक–दूसरे की सहायता करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए उपयुक्त शिक्षण सामग्री प्रदान करने का निरंतर प्रयास करना बच्चों की स्कूली शिक्षा को सुविधाजनक बनाने का एक अप्रतिम तरीका है। केंद्र सरकार ने हाल ही में 12 नए डीटीएच चैनलों के साथ प्रत्येक वर्ग तथा समाज के सभी स्तरों तक पहुंचने के लिए पीएम ई–विद्या मंच लॉन्च किया है। ये प्रयास स्कूल जाने वाली आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए फायदेमंद साबित हुए हैं।

भारत जैसे विकाशील देश में ऑनलाइन माध्यम से सभी को शिक्षित करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। ऑनलाइन शिक्षण में छात्रों और शिक्षकों को कई तरह की चुनौतियों और समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। इस वैकल्पिक माध्यम ने ऑनलाइन कक्षाओं तक पहुँचने के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता के मामले में सामाजिक असमानताओं की विशेषता वाले भारतीय समाज की उन वास्तविकताओं को भी सामने लाया है जो तमाम प्रयासों के बावजूद निरन्तर बनी हुई हैं। ये डिजिटल पहल शिक्षा प्रणाली पर कुलीन स्कूलों के आधिपत्य को बनाए रखते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ग्रामीण और शहरी तथा अमीरों और गरीबों के बीच डिजिटल विभाजन होता है। यह डिजिटल विभाजन सरकार के काम और भूमिका के साथ–साथ राज्यों में गैर–सरकारी संगठनों को भी प्रभावित कर रहा है क्योंकि हाल ही में लाखों मजूदरों के अपने मूल स्थानों पर प्रवास के कारण उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे में केंद्र तथा राज्य सरकारों, दोनों को न केवल मजदूरों के रोजगार के लिए बल्कि उनके बच्चों की शिक्षा के लिए भी एक रोड मैप बनाना होगा। इंटरनेट और संबद्ध सुविधाओं के मामले में राज्यों के बुनियादी ढ़ांचे में बहुत अंतर को देखते हुए यह एक बड़ा काम प्रतीत होता है। इसके अलावा, गैर–सरकारी संगठन जो स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका के मामले में समाज के हाशिए के वर्गों का समर्थन करते हैं तथा सामाजिक उन्नयन के लिए चलाए जाने वाले कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सरकारों के साथ सहयोग करते है, आज गंभीर वित्तीय संकट का सामना कर रहे है क्योंकि सरकार द्वारा खर्च किए जाने वाले धन के अधिकांश हिस्सें को महामारी से निपटने के लिए मोड़ दिया जा रहा है।

इन ऑनलाइन प्लेटफार्मों तक पहुँचने के दौरान छात्रों और शिक्षकों के अपने संघर्ष भी होते हैं। वित्तीय बाधाओं के कारण, छात्र इंटरनेट का उपयोग करने में सक्षम नही हैं, और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स और लैपटॉप, फोन या कंप्यूटर या यहां तक कि रेडियो और टीवी से रहित हैं। जिन छात्रों को ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने की सुविधा है, वे भौतिक स्थान की अनुपलब्धता के मामले में बाधाओं का सामना करते हैं, जो समान रूप से उन शिक्षकों पर लागू होता है जो अपने घर से ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने वाले हैं। लड़कियों के साथ भेदभाव के रूप में सामाजिक बाधाएं भी हैं, क्योंकि उनसे सुबह में ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के बजाय घर के काम करने की उम्मीद है। ग्रामीण क्षेत्रों में, लड़कों से अक्सर परिवार की उम्मीद होती है कि वे खेतों पर काम करें। जिन घरों में टीवी और रेडियो उपलब्ध हैं, उन गैजेट्स पर नियंत्रण रखने का प्रश्न महत्वपूर्ण है। अधिकांश समय, लड़कियों को शैक्षिक कार्यक्रम देखने की अनुमति नही होती है।

भारत के संविधान में सशोधन का उद्देश्य सभी नागरिकों को जाति, वर्ग और धर्म के बावजूद शिक्षा के अवसरों की समानता प्रदान करना है। अनुच्छेद 29 (1) केवल धर्म, जाति, भाषा या उनमें से किसी के आधार पर भेदभाव के बिना राज्य द्वारा बनाए गए शैक्षिक संस्थानों के लिए समान पहुंच प्रदान करता है। इसी प्रकार, शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, छह से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को समान गुणवता वाली शिक्षा प्रदान करने का आदेश देता है। हालाँकि, महामारी के दौरान शिक्षा प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार के सभी प्रयास इस तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं कि सार्वजनिक/ सरकारी शिक्षा प्रणाली और कम शुल्क वाले निजी स्कूल या किफायती निजी स्कूल, ऑनलाइन के सरकारी पहल के दायरे से बाहर हैं। चिंताजनक तथ्य यह है कि सरकार सामाजिक असमानताओं की वास्तविकता से बेखबर है जो ऑनलाइन शिक्षा तक पहुँचने में सबसे बड़ी बाधा साबित हो रही है। हालाँकि, जब प्रौद्योगिकी सक्षम हो रही है, तो यह सीमित भी हो सकती है, विशेष रूप से भारत में, जहाँ बुनियादी पहुँच एक चुनौती है। हर छात्र के घर में कप्यूटर या फास्ट–सट्रीमिंग इंटरनेट नहीं है। यह उपस्थिति और ऑनलाइन सत्र में भागीदारी के समक्ष एक बडी समस्या है। आई. आई. टी. कानपुर के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि इसके 2,789 छात्रों में से 9.3 छात्र संस्थान द्वारा भेजे गए सामग्री को डाउनलोड करने या ऑनलाइन अध्ययन करने में सक्षम नहीं थे। केवल 34.1 प्रतिशत लोगों के पास ही इंटरनेट कनेक्शन था, जो वास्तविक समय के व्याख्यानों के लिए पर्याप्त था। 25,000 उत्तरदाताओं के बीच Local Circle द्वारा किए गए एक अन्य सर्वेक्षण में पाया गया कि ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने के लिए घर पर केवल 57 प्रतिशत छात्रों के पास आवश्यक हार्डवेयर – कंप्यूटर, राउटर और प्रिंटर उपलब्ध थे।

शिक्षकों के लिए ऑनलाइन शिक्षा

लाभ

- प्रौद्यागिकी और ऑनलाइन टूल शिक्षक को शिक्षण के नवीन तरीकों का ज्ञान कराता है।
- भौगोलिक क्षेत्रों में बड़ी संख्या में छात्रों तक पहुंचने में सहायक होता है।
- दूरस्थ शिक्षा के लिए विशेष रूप से उपयोगी होता है।

सीमाएँ

- ऑनलाइन शिक्षण में समय और अभ्यास लगता है।
- छात्रों का मूल्यांकन निष्पक्ष तरीके से नहीं किया जा सकता है।
- छात्रों के साथ आमने—सामने जुड़ने में असमर्थता और मुफ्त बातचीत, चर्चा और सलाह देने की सुविधा नहीं होती है।
- तकनीकी सीमाओं के कारण सभी छात्रों तक पहुंचने में असमर्थता होती है।

छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा का लाभ

- विभिन्न ऑनलाइन टूल और विधियो का उपयोग करके सीखने की क्षमता में वृद्धि हो रही है।
- महामारी के कारण छात्रों के अधिगम में कोई व्यावधान नहीं आ रहा है।
- रिकॉर्ड किए गए और लाइव वार्तालापों को सुनकर छात्रों के अधिगम में वृद्धि हो रही है।

सीमाएँ

- कक्षाओं में होने वाली बातचीत, बहस और चर्चाओ का अभाव।
- कमजोर उपकरणों या इंटरनेट के कारण होने वाली तकनीकि दिक्कतें।
- ऑनलाइन सीखने और सिखाने के लिए अभ्यास का अभाव है।

सारांश

COVID - 19 ने दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थानों की पारंपरिक शिक्षण पद्धति को प्रभावित किया है। स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के प्रशासन ने शिक्षा को फिर से शुरू करने के लिए वैकल्पिक तरीके के रूप में ऑनलाइन व्याख्यान, कक्षाओं का विकल्प चुना है। यद्यपि COVID-19 महामारी के बीच छात्रों की सुरक्षा और संकाय के स्वास्थय की रक्षा में ऑनलाइन शिक्षण मददगार साबित हो रहा है, हालांकि, यह पारंपरिक शिक्षा के रूप में प्रभावी नहीं है। पिछले कुछ महीनों के दौरान देश में कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ऑनलाइन कार्यशाआलों, सेमिनारों का आयोजन कराया गया जो छात्रों और शिक्षकों दोनों के अधिगम वृद्धि के लिए ही बहुत ही महत्वपूर्ण साबित हुई है। फिर भी ऑनलाइन शिक्षा भारत जैसे देश में वांछित परिणाम नहीं दे सकती है, जहां अधिकांश छात्र तकनीकि और साथ ही मौद्रिक मुद्दों के कारण इंटरनेट का उपयोग करने में असमर्थ हैं। तकनीकि और मौद्रिक मुद्दों के अलावा छात्रों ने कुछ अन्य कठिनाइयों की भी सूचना भी दी है जैसे प्रशिक्षक के साथ बातचीत की कमी, प्रतिक्रिया का समय और पारंपरिक कक्षा जैसी सामाजीकरण की अनुपस्थिति आदि। ऑन—कैंपस सोशलाइजेशन की कमी के कारण दूरस्थ शिक्षा मोड में समूह परियोजना करना छात्रों के लिए लिए कठिन कार्य बन गया है। ऐसे में शैक्षिक संगठनों को अपने

पाठयक्रम में सुधार करने और ऑनलाइन व्याख्यान के लिए उपयुक्त सामग्री डिजाइन करने की आवश्यकता है। पारंपरिक और ऑनलाइन पद्धति में सीखने की दक्षता की तुलना करते समय छात्रों ने महसूस किया कि प्रभावी शिक्षण के लिए उनके प्रशिक्षक के साथ आमने–सामने संपर्क महत्वपूर्ण था जो दूरस्थ शिक्षा मोड में गायब है। डब्लयू. एच. ओ. के निर्देशों के अनुसार, अब हमें कुछ समय के लिए COVID - 19 के साथ अपनी दैनिक गतिविधियों को समायोजित करना होगा, जिसका अर्थ है कि शिक्षण संस्थानों को उचित और प्रभावी सामग्री तैयार करनी होगी, तथा शिक्षण की एक प्रभावी व्यवस्था करनी होगी। अभी भारत में शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण के लिए और अधिक डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करना होगा ताकि बेहतर शिक्षण परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

संदर्भ

1. DD News. UGC forms Committee to Encourage Online amid Lockdown. Retrieved on April. 16, 2020 from http://ddnews.gov.in/national/ugc-formscommittee-encourage-online-learning-amid-lockdown
2. Google Search. Best Free Video Conferencing Tools. Retrieved onApril 15, 2020 from https://www.owllabs.com/blog/video-conferencing tools
3. Joshua Stern. Introduction to Online Teaching and Learning. Retrieved on April 17.
4. http://www/wlac.edu/online/documents/otl/pdf
5. UGC Notice. An Appeal for Inviting ideas/suggestions for 'Bharat Padhe Online campaign'. Retrieved on April 16, 2020 from https://www/igc/ac/in.
6. UGC Notice. An Appeal for Inviting ideas/suggestions for "Bharat Padhe Online campaign" Retrieved on April 16, 2020 from https://www.ugc.ac.in.
7. UNESCO. COVID – 19 Educational Disruption and Response. Retrieved on April 14. 2020 from https://en.unesco.org/covid19/educationresponse. UNESCO. Distance Learning Solutions. Retrieved on April 14,2020 from https://en.unesco.org/covid19/educationresponse.
8. UNICEF. Children at Increased Risk of Harm Online during Global Covid- 19 Pandemic. Retrieved on April 16,2020 from
9. https://www.unicef.org/turkey/en/press-releases/children-increased-risk-harmonline during global-covid-19 pandemic
10. Wiesemes. R. & Wang, R.(2010). Video conferencing for opening classroom doors in Initial Teacher Education: Sociocultural Processes of Mimicking and Improvisation. International Journal of Media, Technology and Lifelong Learning, 6 (1): 1-15,
11. World Bank. How Countries are using Edtech to Support Access to Remote Learning
12. https://www.worldbank.org/en/topic/edutech/brief/how-countries-are-using-edtechto-support-remote-learning-during-the-covid-19-pandemic
13. अग्रवाल एवं अस्थाना. (1998) मनोविज्ञान और शिक्षा, विनोद प्रकाशन, आगरा।
14. पाठक, पी.डी., (2005), शिक्षा मनोविज्ञान, नवीनतम संस्करण विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2।
15. पाण्डेय, रामशकल. (2003) शिक्षा मनोविज्ञान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
14. श्रीवास्तव, डी. एन. वर्मा प्रीति, (1997) मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा – 2।

कोरोना का शिक्षा एवं समाज पर प्रभाव

– हरे कृष्ण

आरम्भिक काल से ही मानव अपने जीवन को सुरक्षित, स्वस्थ एवं चिरकालिक बनाए रखने के लिये नित नये अनुभव, अनुकरण, अनुप्रयोग एवं शोध करता रहा है। मानव ने अपने जीवन को सम्मुन्नत बनाने की दिशा में निरन्तर व्यक्तिगत/सामुदायिक प्रयास करने के साथ–साथ सामुहिक गतिविधियों के माध्यम से उसके प्रसार पर भी बल दिया, जिसका परिणाम है कि आज हम एक पुरातन मानव से आधुनिक मनुष्य कहलाने योग्य बन सके। मनुष्य के विकास में जहां एक ओर प्राकृतिक संसाधनों का सतत सहयोग मिलता रहा है वहीं दूसरी ओर प्राकृतिक आपदाओं के कारण उत्पन्न विनाश लीलाओं ने सभ्य जीवन को कई बार छिन्न–भिन्न भी किया है। आपदायें सामान्यतया दो प्रकार की होती हैं – प्रकृति प्रदत्त एवं मानव प्रदत्त। प्रकृति प्रदत्त वे आपदायें होती हैं जो प्राकृतिक घटनाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं, जैसे – बाढ़, सूखा, आकाशीय बिजली (Lightning), भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट एवं महामारी आदि। मानव प्रदत्त आपदायें प्राकृतिक आपदाओं से भिन्न होती हैं क्योंकि ये घटनायें मानव मंशा, लापरवाही, त्रुटि या मानव निर्मित प्रणाली की विफलताओं से प्रेरित होती हैं जैसे – संसाधनों के अतिशय दोहन, औद्योगिक क्रान्ति, जीवाश्म ईधन, मानवकृत कचरा कुप्रबंधन, प्रयोगशालाओं द्वारा उत्पादित स्राव के परिणामस्वरूप विभीशिकाएं देखने को मिलती है। ये प्राकृतिक आपदाएं हिरोशिमा – नागासाकी पर परमाणु बम विस्फोट, भोपाल गैस त्रासदी, विशाखपत्तनम गैस रिसाव तथा रासायनिक एवं जैविकीय हमलों के रूप में दृष्टिगत होता है।

21वीं सदी में चीन के वुहान (Gwcsb) शहर में, सन् 2020 के आखिरी कुछ महीनों के दौरान कोरोना वायरस का मामला सर्वप्रथम देखने को मिला जिसने थोड़ी ही समय में पूरी दुनिया को अपने गिरफ्त में ले लिया। इस महामारी के कारण ना केवल लाखो लोगों की जान गई बल्कि इसने विश्व भर में शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका, अर्थव्यवस्था, रक्षा एवं रहन–सहन आदि को बुरी तरह प्रभावित किया है। अगर हम महामारी के इतिहास को देखें तो पिछली कई महामारियों ने अलग–अलग समय में मानव जाति का संहार किया है। सन् 1918 में स्पेनिश फ्लू से पूरे विश्व में करीब 5 करोड़ लोगों ने अपनी जान गंवायी थी। इन महामारियों के समय भी लॉकडाउन, आईसोलेशन और सोशल–डिस्टेंसिंग ही बचाव के कारगर उपाय साबित हुए थे।

कोरोना का शिक्षा पर प्रभाव

कोरोना एक आकस्मिक बीमारी है जिसने भारत सहित विश्व के लगभग 195 देशों को अपने चपेट में ले लिया है। भारत में 23 मार्च 2020 से कारोना संक्रमण को रोकने के लिए

सभी शैक्षणिक संस्थाओं को बंद कर दिया गया था। इस बंदी के संबंध में यूनेस्को द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगभग 32 करोड़ विद्यार्थी प्रभावित हुए हैं। शिक्षा व्यवस्था को सुचारू रखने के लिए आनलाइन कक्षाएं अवश्य संचालित की जा रही हैं। पर इन कक्षाओं के संचालन में विभिन्न इलेक्ट्रानिक्स एवं संचार माध्यमों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। ये कक्षायें विविध प्रकार की होती हैं यथा–

1. Conferencing Classes- इसके अन्तर्गत छात्रों को दृष्य या श्रव्य माध्यम से गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान की जाती है। इस तरह की कक्षायें Facing Interaction Class का प्रतिरूप होती हैं।
2. Synchronous और Asynchronous Classes: Synchronous कक्षायें "at the same time line communication" **के वातावरण में संचालित होती हैं जबकि** asynchronous कक्षायें "not at the same time" पर संचालित होती हैं। इसमें छात्र और शिक्षक दोनों अपनी सुविधानुसार assignment और project work को पूरा करते हैं।
3. Open Scheduled Classes: **इसके अन्तर्गत छात्रों को समय का बन्धन नहीं रहता है। वे Internet आधारित पाठ्य सामग्री को** email, telegram, whatsapp **इत्यादि के माध्यमों से प्राप्त कर अध्ययन करते रहते हैं।**
4. Computer Based Classes: इसके अन्तर्गत शिक्षक के बदले कम्प्यूटर आधारित पाठ्य सामग्री होती है।

कोरोना का शिक्षा पर प्रभावः कोरोना का शिक्षा पर प्रभाव निम्नवत् है–

1. मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक कुशलता – ऑनलाइन कक्षायें संचालित हाने से, शिक्षक अपने पाठ्य सामग्री को सरल, रोचक एवं कक्षा स्तर के अनुरूप बनाकर प्रेषित करने का प्रयास करते हैं जिससे छात्रों को सीखने मे कठिनाई न हो। इससे शिक्षकों में बाल मनोविज्ञान के साथ – साथ व्यावहारिक मनोविज्ञान के ज्ञान में वृद्धि हो रही है या वे उक्त ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।
2. तकनीकी ज्ञान – तकनीकी ज्ञान के अभाव में ऑनलाइन कक्षायें संचालित करना दुरूह व दुष्कर कार्य है। शिक्षक एवं शिक्षार्थी जो अब तक विभिन्न दूरस्थ तकनीकी ज्ञान से अनभिज्ञ थे, वे इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर आधुनिक एवं तकनीकी आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहे हैं। छात्र स्काइपे, एपेयरेंस और गुगल क्लासरुम के माध्यम से शिक्षक से जुड़े रहते हैं।
3. दूरस्थ शिक्षा पर प्रभाव– बदलते परिवेश में परम्परागत शिक्षा माध्यमों के स्थान पर दूरस्थ शिक्षा पर बल दिया जा रहा है। इसी का परिणाम है कि चहारदीवारीयुक्त शिक्षण संस्थाओं के स्थान पर आभासीकरण Virtualization को प्रश्रय मिला है।

4. नवीनतम ज्ञान में वृद्धि– परम्परागत शिक्षण में छात्र एवं शिक्षक पाठ्यक्रम तक ही सीमित रह जाते हैं जबकि ऑनलाइन कक्षाओं में वे अपने पाठ्यक्रम और उद्देश्यों की पूर्ति हेतु Internet की मदद लेते हैं जिससे जाने–अनजाने में पाठ्यक्रम से सम्बन्धित अतिरिक्त ज्ञान में वृद्धि होती है।

5. सीमित संसाधनों में असीमित उद्देश्यों की पूर्ति– परम्परागत कक्षा शिक्षण में अध्यापन एवं अन्य विद्यालयीय कार्यों हेतु मानवीय संसाधनों के साथ – साथ भौतिक, तकनीकी, एवं सूचना संचार प्रणाली की आवश्यकता होती है जो व्यय साध्य है। परन्तु ऑलाइन माध्यम से सीमित साधनों में ही असीमित उद्देश्यों की पूर्ति हो जाती है।

6. विद्यार्थियों में स्वअधिगम का विकास – दूरस्थ माध्यम से छात्रों द्वारा पाठ्यवस्तु के अध्ययन के अतिरिक्त गृह कार्य, अधिन्यासीय कार्य या Test की तैयारी के लिये विभिन्न माध्यमों से भी अध्ययन सामग्री एकत्रित करते हैं। इससे उनमें स्वअधिगम की क्षमता में वृद्धि होती है।

7. अभिभावकों का ICT के प्रति सार्थक दृष्टिकोण– आज के Hi-Tech युग में भी बहुत से अभिभावक परम्परागत शिक्षण – प्रणाली में विश्वास रखते हैं। शिक्षा संस्थाओं के बन्द होने और दूरस्थ शिक्षा के संचालन से अभिभावकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। वे सूचना एवं संचार तकनीकि की भूमिका को स्वीकार कर अपने बच्चों में इसके प्रति सकारात्मक रूख अपना रहे हैं।

8. शिक्षण में विविधता– पाठ्य सामग्री के लिये विभिन्न माध्यम जैसे – रेडियो, टेलीविजन, सेलफोन, कम्प्यूटर और नेटवर्क, हार्डवेयर एवं साफ्टवेयर, सेटेलाइट सिस्टम, विभिन्न इलेक्ट्रानिक्स तथा सोशल मीडिया उपलब्ध है। इन माध्यमों से ऑनलाइन कक्षा अध्यापन के साथ – साथ पाठ्य सामग्री को विभिन्न कोचिंग संस्थाओं, शैक्षिक संगठनों, शिक्षा परिषदों, व्यक्तियों द्वारा अत्यंत रोचक, सरल, वैविध्यपूर्ण, मनोवैज्ञानिक तथा एनिमेटेड तरीके से प्रस्तुत किया जा रहा है। इससे स्वाभाविक ही विद्यार्थी अपनी रूचि एवं समझ के अनुसार सीखने हेतु प्रेरित हो रहे हैं।

दुष्प्रभाव

ऑनलाइन कक्षाओं के अच्छे प्रभाव के साथ–साथ इसके कुछ दुष्प्रभाव भी है जो निम्नलिखित हैं –

1 ICT के प्रयोग से छात्रों में बढ़ती कुप्रवृत्तियां– ICT माध्यमों से कुछ विद्यार्थी अध ययन करने के साथ – साथ गेम खेलने, सोशल एवं पार्न साईटस के प्रयोग, चैटिंग और चलचित्र देखने तथा अन्य इंटरनेट सम्बन्धी कुप्रवृत्तियों की ओर उन्मुख होते जा रहे हैं।

2 छात्रों के मन–मस्तिष्क एवं आँखों पर दुष्प्रभाव मोबाइल एवं इंटरनेट के लगातार प्रयोग से छात्रों में 'नोमोफोबिया' (फोन खो जाने का भय), कम्प्यूटर विजन सिंड्रोम (आखों में सूजन एवं धुंधला दिखना), अनिद्रा, आत्मविश्वास में कमी, 'टेक्स्ट नेक' (गर्दन के दद) तथा इण्टरनेट के रेडिएशन से अंगों में विकार जैसी बीमारियों में वृद्धि हो रही है।

3 अव्यवस्थित दिनचर्या में वृद्धि– लगातार मोबाइल एवं लैपटाप से अध्ययन करने तथा कोई निर्धारित समय – सारणी न होने के अलावा कभी इंटरनेट की धीमी गति, बैटरी चार्जिंग हेतु बिजली अथवा नेट पैक की उपलब्धता ना होना इत्यादि कारणों से भी विद्यार्थियों की दिनचर्या अव्यवस्थित हो जाती है।

4 संसाधनों के अभाव में शिक्षा वंचना – वर्तमान में तमाम ऐसे विद्यालय और छात्र हैं जो ऑनलाइन पढ़ाई हेतु साधन संपन्न नही हैं। गूगल इंडिया सर्वेक्षण के अनुसार भारत जैसे कृषि एवं श्रम प्रधान देश में लगभग 49 प्रतिशत घरों तक ही इण्टरनेट की उपलब्धता है। इसके अतिरिक्त online classes हेतु आवश्यक Android Phone, Computer, Tablet, Broadband connection, Printer आदि की भी सर्वजन उपलब्धता नहीं है।

5 विद्यालय प्रबंधतंत्र द्वारा शिक्षकों का पोषण– विद्यालयों के बन्द रहने तथा ऑनलाइन कार्य सम्पादन ने प्राइवेट शिक्षकों को हाशिये पर ला दिया है। पूरे सत्र का शुल्क आरम्भ में लेने या प्रतिमाह जमा होने के बाद भी आर्थिक तंगी का रोना रोकर अधिकांश शिक्षकों को विद्यालयों से निष्कासित कर दिया गया है। पेशेवर लोगों से अध्ययन सामग्री तैयार कराकर शिक्षण कराने पर बल दिया जा रहा है। इससे शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के सामने रोजी – रोटी का संकट उत्पन्न हो गया है।

6 अन्तःक्रियात्मक शिक्षण का अभाव – ऑनलाइन कक्षायें संचालित होने से शिक्षक एवं छात्रों के मध्य विचारों के आदान – प्रदान, पृष्ठपोषण, पुनर्बलन आदि सुगमतापूर्वक न हो पाने के कारण अन्तः क्रियात्मक शिक्षण का अभाव दृष्टिगोचर होता है।

7 प्रयोग एवं परीक्षण का अभाव – दूरस्थ माध्यम से कक्षाओं के संचालन में पढ़ाई तो हो रही है पर विद्यालय न जा पाने के कारण विद्यार्थी प्रयोगात्मक कार्य से वंचित हो रहे हैं। इससे उन्हे व्यावहारिक ज्ञान नहीं मिल पाता। साप्ताहिक एवं मासिक परीक्षा इत्यादि न हो पाने या छात्रों द्वारा समय से उत्तर न भेज पाने के कारण छात्रों का मूल्यांकन भी ठीक ढंग से नहीं हो पा रहा है।

कोरोना का समाज पर प्रभाव

कोरोना महामारी का शिक्षा के अलावा समाज पर भी प्रभाव पड़ा है क्योंकि शैक्षणिक

संस्थान समाज के अभिन्न अंग होते हैं। कोरोना का समाज पर प्रभाव निम्नलिखित रुप से पड़ रहा है–

1. समाज का नवीन तकनीकी के प्रति सार्थक दृष्टिकोण– कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए किए गए लॉकडाउन के कारण लगभग अधिकांश कार्यालयी कार्य घर से ही संचालित किया जा रहा था। इससे समाज का नवीन तकनीकी (Technology) के प्रति सार्थक दृष्टिकोण विकसित हुआ है।
2. पारिवारिक घनिष्ठता– रोजगार, नौकरी एवं आर्थिक समृद्धि के लिए लोग अपने घर से दूर – दराज के क्षेत्रों में अकेले प्रवासी जीवन व्यतीत करते हैं। इससे वे एकाकीपन के साथ – साथ पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन ठीक ढंग से नहीं कर पाते। लॉकडाउन में लगभग अधिकांश लोगों के घर में ही रहने (Stay at the home) के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में दृढ़ता एवं घनिष्ठता आयी है।
3. आर्थिक संकट– लॉकडाउन के कारण अधिकांश कल–कारखाने, उद्योग–धंधे, परिवहन, व्यापार, वाणिज्य एवं कुटीर उद्योगों के लम्बे अन्तराल तक बन्द रहने के कारण सरकारी वेतन भोगियों को छोड़ लगभग अधिकांश लोगों की आर्थिक स्थिति खराब हुई है। विश्व बैंक का अनुमान है कि वित्तीय वर्ष 2019–2020 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर मात्र 5 प्रतिशत तथा 2020 –2021 में घटकर केवल 2.8 प्रतिशत रह जायेगी। रोजगार–बेरोजगारी सर्वेक्षण 2015–16 के अनुसार भारत के कुल कार्यबल का लगभग 8 प्रतिशत से अधिक हिस्सा अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है। कोरोनाकालीन बंदी से सामाजिक–आर्थिक विषमता में वृद्धि हुई है।
4. आत्मनिर्भरता– लॉकडाउन काल में बेरोजगार हुये लोग स्वयं अपने आस–पास कोई न काई रोजगार करने या ढूढने हेतु बाध्य हुये हैं। इससे उनमें आत्मनिर्भरता में वृद्धि हुई है। भारत सरकार भी आत्मनिर्भरता (Self Reliance) पर विशेष बल दे रही है।
5. महिलाओं पर अनावश्यक बोझ– लोगों के घर में ही रहने के कारण परिवार के अधिकांश सदस्यों का एकत्रित होने से घर की महिलाओं पर घरेलू काम का अनावश्यक बोझ पड़ना स्वाभाविक है। खासतौर पर उन परिवारों में जहाँ परिवार के पुरूष सदस्य घरेलू कार्य में सहयोग प्रदान न करते हों। इतिहास गवाह रहा है कि युद्ध और बीमारियाँ सबसे ज्यादा महिलाओं को ही प्रभावित करती है।
6. साफ–सफाई के प्रति जागरूकता– कोरोना जैसी संक्रामक महामारी ने लोगों को साफ–सफाई के प्रति जागरूक किया है। लोग शरीर के साथ–साथ घर एवं पास–पड़ोस की सफाई पर भी ध्यान दे रहे हैं। इसके अलावा शासन–प्रशासन भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रहा है। इतिहास साक्षी है कि महामारी में घर क्या शहर भी चमकने लगता है। गुजरात के सूरत में, 1994 में फैली प्लेग महामारी ने एक गन्दे शहर के रूप में पहचाने जाने वाले सूरत को एक साफ–सुथरे शहर में बदल दिया। बाद में यह देश के स्वच्छ शहरो में गिना जाने लगा। स्वच्छता

सर्वेक्षण 2020 में भी सूरत देश में दूसरे स्थान पर चयनित हुआ है।

7. पर्यावरण प्रदूषण में कमी– लॉकडाउन की अवधि में परिवहन के साधन, उद्योग–धन्धे, कुटीर उद्योग, खनन एवं शोधन आदि कार्यों के बन्द रहने से पर्यावरण प्रदूषण में भारी कमी आयी। सेंटर फार साइंस एंड एनवायरमेंट के अनुसार लॉकडाउन के पहले राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) दिल्ली में प्रदूषण का PM 2.5 (Particulate Matter या Particle Pollution 2.5) का स्तर 300 के ऊपर था, जो लॉकडाऊन की अवधि में घटकर 101 पर आ गया। इस प्रकार कोरोना ने भारत ही नहीं बल्कि विश्व में जल, वायु एवं मृदा प्रदूषण में कमी लायी।

8. भारतीय संस्कृति का प्रसार– भारतीय संस्कृति अपने आप में एक आदर्श एवं उच्च कोटि की संस्कृति रही है। सूचना एवं संचार तकनीकी ने पूरे विश्व को एक सघन इकाई में रूपान्तरित कर दिया है जिसका दुष्परिणाम है कि पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण ने हमारी संस्कृति को भी विकृत कर दिया है। कोरोना जैसी संक्रामक महामारी ने हाथ मिलाने, आलिंगन, चुंबन, आमिश भोजन, इत्यादि के प्रति पूरे विश्व के दृष्टिकोण को परिवर्तित किया है। योग, प्राणायम, निरामिश भोजन, ताजे खाद्य पदार्थ, दोनों हाथ जोड़कर अभिवादन या नमस्ते करने जैसे भारतीय रहन–सहन को आज समूचा विश्व समुदाय स्वीकार कर रहा है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कोरोना ने भारत सहित पूरे विश्व में एक दूरगामी प्रभाव छोड़ा है। एक ओर जहाँ दूरस्थ माध्यम से विद्यार्थियों में अध्ययन करने की विभिन्न विधायें विकसित हुई हैं वहीं दूसरी ओर पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय रहन–सहन, खान–पान, शिष्टाचार तथा आत्मनिर्भरता आदि में लोग अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति जागरूक हुए हैं। परन्तु हमें ऑनलाईन शिक्षा से वंचित उस वर्ग की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है महामारी के कारण जिनकी रोजी–रोटी छिन गई। इन निराश्रितों के प्रति संवेदनाओं के साथ सहयोग किया जाना भी जरूरी है, ताकि सामाजिक–आर्थिक–शैक्षिक स्तर पर ज्यादा विषमता ना उत्पन्न हो सके। ऐसी विपन्नता आने से समाज में जहाँ सामाजिक मूल्यों का ह्रास होता है तो वहीं दूसरी तरफ समाज एवं राष्ट्र में स्वाभिमान गौरव जैसे नियामक तत्वों का भी लोप हो जाता है।

संदर्भ

1. https://en.unesco.org.covid19.
2. https://www.statista.com.statistics
3. Meenakumari, J.&Krishnavenu,R.(2010) I.C.T. Based and Learning in Higher Education a Study, International Journal of Computer and Emerging Technology,
4. https://www.worldbank.org.country
5. https://www.cseindia.org
6. Developing Research-Based Learning using I.C.T. in Higher Educational Curriculam - the Role of Research and Evaluation.

यादगार अनुभव, बदलता दृष्टिकोण

— सबा

बात उस दिन की है जब मैं अपनी एक करीबी दोस्त से मिलने पश्चिमी दिल्ली स्थित जनकपुरी जा रही थी। मैं जल्दी–जल्दी मेट्रो स्टेशन पहुँची और वहां लागू नियमों का पालन करते हुए आगे बढ़ी। मैनें स्कैनिंग मशीन में अपना बैग डाला। पर जैसे ही मैंने अपना बैग रखा वहां खड़ी पुलिस ने मुझे साइड होने का इशारा किया। मैं थोड़ा सहम गई। इसी बीच उसी मेट्रो स्टेशन के नीचे स्थित पुलिस स्टेशन से कुछ और पुलिस वाले भी वहां आ गए। मेरा डर और बढ़ता गया क्योंकि मुझे वाकई समझ नहीं आ रहा था कि ये हो क्या रहा है? मैं अकेली एक किनारे में खड़ी थी और शायद लोग मुझे शक भरी निगाहों से भी देखने लगे थे।

पुलिस को शायद यह शक था कि मेरे बैग में कुछ ऐसा है जो नहीं होना चाहिए था। फिर क्या था, उन्होने पूरी जांच करनी शुरू कर दी और मुझसे प्रश्न करना प्रारंभ कर दिया। कोई धातु का सामान मेरे बैग में है यह जानकर उन्होंने बैग में रखी सारी चीजें देखनी चाही। मेरे बैग में से दो चीज़ें निकली। पहला, 'भगवान बुद्ध' का एक स्टैच्यू और दूसरा एक 'खदा'। यह देख पुलिस वालों ने जानना चाहा कि मैं कहां से आ रही हूं और कहां जाना चाहती हूं। मैनें शांत लहजे में जवाब दिया कि यह एक गिफ्ट है जिसे मैं अपनी दोस्त को देने जा रही हूं।

एक मुस्लिम के हाथों 'भगवान बुद्ध' का स्टैच्यू देख शायद पुलिस वालों को कुछ अटपटा सा लगा। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि ऐसा बहुत कम देखने को मिलता है। उनकी बढ़ती उत्सुक्ता को देख मैनें बताया कि ऐसा मेरे पिता प्रो. ए. एच खान के विचारों के प्रभाव के कारण हुआ है। मैंने बताया कि मेरे पिता भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ, नई दिल्ली के संयुक्त सचिव तथा भगवान बुद्ध के निर्वाण स्थल बोध गया केंद्रित इंटर–फेथ फोरम के सचिव हैं जिन्हें चौदहवें होलीनेस 'दलाई लामा' के द्वारा बोध गया में इस बहुमूल्य 'खदा' से सम्मानित किया जा चुका है। ये दोनों ही संस्थाएं सभी धर्मों के मानने वालों को सम्मान की दृष्टि से देखती है तथा सकारात्मक सोच को बढ़ावा देती हैं। मेरे पिता के इन सरोकारों तथा सामाजिक सक्रियता के कारण हमें बचपन से ही सभी धर्मों की इज्जत करने की शिक्षा मिली है और जब भी अवसर मिलता है मैं स्वयं भी इन संस्थाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेती हूं।

यह सब जानकर वहां उपस्थिति पुलिस वालों के व्यवहार का रूखापन मधुरता में बदलने लगा। अब मुझे उनकी दृष्टि में अपने प्रति सम्मान प्रतीत होने लगा। यह वास्तव में मेरे लिए एक सुखद एहसास था। मुझे पूरा विश्वास है कि सकारात्मक सोच के कारण कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी बदलाव लाया जा सकता है।

आचार्य विनोबा भावे के दर्शन में निहित शान्ति शिक्षा

– शैलजा मिश्रा

पुष्प की सुगंध वायु के विपरीत कभी भी नहीं जाती लेकिन मानव के सद्‌गुण की महक सब ओर फैल जाती है। आचार्य विनोबा भावे एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिसकी यशगधं संस्कृति में फैली है। विनोबा ने अपने व्यक्तित्व के सद्‌गुणों से बिना किसी भेदभाव के समस्त मानव जाति का सुबासित किया है जिसके लिये मानव जाति आज भी उनकी ऋणी है। आचार्य विनोबा भावे का जीवन दर्शन कर्म आधारित रहा है, इन्होंने सदा कर्म की आराधना की तथा वे कर्मयोगी कहलाए। वे मानते थे कि व्यक्ति का जीवन उसकी इच्छा, कर्म व विचारों की त्रिवेणी से प्रभावित होता है। व्यक्ति को उत्तम पुरूष की श्रेणी में स्थापित होने के लिए इन तीनों अर्थात् इच्छा, कर्म एवं विचारों में सद्‌गति होना तथा इन तीनों के मध्य एकात्मकता का होना आवश्यक है और आचार्य विनोबा भावे ने अपने को उन विरले व्यक्तियों में सम्मिलित किया जिनमें इस दुर्लभ एकात्मकता का दर्शन होता है। कर्म में उनकी इच्छशाक्ति एवं विचारशक्ति स्पष्ट देखी जा सकती थी।

आचार्य विनोबा जी का जन्म 11 सितम्बर 1895 को गागोद गाँव (पेण तहसील, जिला रामगढ़, महाराष्ट्र) में हुआ था। इनके बचपन का नाम विनायक नरहरि भावे था। किन्तु समस्त भारतवर्ष में यह सन्त विनोबा या आचार्य विनोबा भावे के रूप में विख्यात हुए। इनके पिता का नाम शम्भूराव भावे तथा माता का नाम रूक्मिणी देवी था। ये चार भाई तथा एक बहन थे, जिनके नाम क्रमशः विनायक, बालकृष्ण, शिवाजी, दत्तासेन तथा शान्ता बहन थे। विनोबा जी के व्यक्त्तिव पर उनके पिता शम्भूराव भावे एवं माता रूकिमणी देवी का विशेष प्रभाव था। ईश्वर के प्रति आस्था एवं भक्ति का प्रसाद उन्हें अपने पिता एवं प्रेम, क्षमा, करूणा, सहयोग, कर्मनिष्ठा का आशीर्वाद उन्हें अपनी माता से संस्कारों के रूप में मिला था।

आचार्य विनोबा कहते थे – 'दूसरों को देने का आनन्द, खिलाकर फिर खाने का संस्कार मुझे मेरी माँ से प्राप्त हुआ।' विनोबा जी की नियमित विद्यालयी शिक्षा 1903 में बड़ौदा के एक प्राथमिक विद्यालय कक्षा 3 से हुई। वे अत्यन्त प्रतिभाशाली एवं मेधावी छात्र थे तथा इसके साथ ही वे अत्यन्त विनीत, आदर्श एवं चरित्रवान छात्र के रूप में पहचाने जाते थे। गाणित एवं दर्शन उनके प्रिय विषय थे। गाणित के विषय में इन्होंने लिखा था ''ईश्वर के बाद यदि मैं किसी वस्तु से प्यार करता हूँ तो वह गाणित है। गाणित के लिए मेरी इतनी उत्कण्ठा थी कि मैं तो सवाल हल करने में लगा रहता था और पास में घण्टों मेरा भोजन पड़ा रहता था। गाणित में मेरी अद्‌भुत प्रतिभा थी, ऐसे कठिन प्रश्नों को भी मैं आसानी से हल कर लेता था, जिनकों हल करने में मेरे अध्यापक भी असफल रहते थे।''

आचार्य विनोबा जी के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन गाँधी जी के संसर्ग में आने के पश्चात् हुआ। महात्मा गाँधी से उनकी प्रथम भेंट 4 जून 1916 को हुई थी। उस समय गाँधी जी सब्जी काट रहे थे, उन्होंने विनोबा जी से भी सब्जी काटने का आग्रह किया। इस प्रकार विनोबा जी को कर्मयोग की प्रथम दीक्षा प्राप्त हुई।

विनोबा जी का सारा जीवन एक साधना का जीवन था। उनकी रूचि न तो भाषण देने में थी और न राजनीति में, वे तो केवल गरीबी, अशिक्षा, ऊँच–नीच के भेद को मिटाने और रचनात्मक कार्यों को करते रहना चाहते थे और और वे इन्हीं में रत् रहते थे। उन्होंने महात्मा गांधी का सत्याग्रह आन्दोलन में भरपूर साथ दिया। 17 अक्टूबर 1940 को गाँधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए विनोबा जी को प्रथम सत्याग्रही घोषित किया। इस सत्याग्रह के लिए उन्हें तीन बार कारावास भी हुआ। वे भारत छोड़ा आन्दोलन के सिलसिले में जेल भी गये थे। 15 अगस्त को देश आजाद होते ही वे बंगाल में दीन–दुखियों के कष्ट का निवारण करने निकले पड़े।

आचार्य विनोबा ने सत्याग्रह पर विश्वास रखते हुए सर्वोदय समाज की स्थापना की। 7 मार्च 1951 को उन्होंने अपनी पैदल यात्रा के दौरान 'भूदान आन्दोलन' का सूत्रपात किया और इसी सिलसिले में 13 अप्रैल 1951 को नरगौड़ा के पोचमपल्ली गाँव में जमींदार रामचन्द्र रेड्डी ने 100 एकड़ ज़मीन देकर विनोबा जी के भूदान यज्ञ में प्रथम आहूति डाली। इस प्रकार आचार्य विनोबा जी ने भूदान आन्दोलन के लिए कई क्षेत्रों की पद्यात्रा की।

सन् 1960 में आचार्य विनोबा जी ने अपनी बौद्धिक कुशलता से डाकुओं का आत्मसमर्पण करवाया। सन् 1947 को अखिल भारतीय स्त्री सम्मेलन में भाग लेते हुए स्त्री शक्ति के महत्व का लोगों को ज्ञान करवाया। 25 दिसम्बर 1974 को उन्होंने मौन व्रत धारण किया, साथ ही गोवध के विरोध में अपना अनशन शुरू किया। इस अनशन के दौरान उनकी हालत बिगड़ते देख मोराजी देसाई ने पशु संबर्द्धन को संविधान की केंद्रीय सूची में डाला।

आचार्य विनोबा गाँधी जी के सच्चे अनुयायी थे, उन्होंने जीवन भर मद्य निषेध तथा सामाजिक बुराईयों एवं भूदान आन्दोलन के लिए निरन्तर संघर्ष किया। 15 नवम्बर 1982 पवनार आश्रम में रहते हुए उन्होनें अपना शरीर त्याग दिया। विनोबा जी को 1958 में प्रतिष्ठित रोमन मैग्सेसे पुरूस्कार तथा 1983 में भारत रत्न से स्मानित किया गया। उन्होंने अपने जीवन में 'मैत्री' तथा 'महाराष्ट्र धर्म' नामक पत्रिका का सम्पादन भी किया।

ऊँ सहनाववतु सह नौभुनक्तु सहवीर्य कर्वावहै। नावधीतमस्तु मा विद्धिशाव है।
ऊँ शांतिः शांतिः शांति।।

उपनिषद् में निहित उपर्युक्त श्लोक में शांति की एक दिव्य भावना अन्तर्निहित है। उक्त श्लोक के अनुसार हमारे ऋषिओं ने कामना की कि हम एक दूसरे की रक्षा करें, एक साथ आन्नद से रहें, अपनी अन्तर्शक्ति को साझा करें, हमारे अध्ययन की चमक दूर तक फैले, हमारे बीच कोई द्वेश, वैरभाव न हो, हम शांति से एक साथ रहें। शांति शब्द आकरिक दृष्टि से सूक्ष्म होने पर भी महत्व की दृष्टि से इतना विस्तृत है कि सम्पूर्ण विश्व का अस्तित्व इसी पर निर्भर है। प्रत्येक कार्य चाहे वह छोटा हो या बड़ा, इसके संपादन हेतु शांति की भूमिका सर्वप्रथम है। सर्वशाक्ति संपन्न होते हुए भी व्यक्ति सुखी नहीं रह पाता तो इसके मूल में शांति का अभाव ही दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार यदि विचार किया जाये तो स्पष्ट होता है कि शांति हमारे जीवन की आवश्यकता है। यह एक ऐसा परमतत्व है जिसके अभाव में जीवन की कल्पना भयभीत करती है। इस सृष्टि के विकास के मूल में शांति है। यदि शांति का तत्व हमारे बीच न होता तो हम इतनी लम्बी विकास यात्रा न कर पाते। इस विकास पथ पर अग्रसर बने रहने हेतु यह आवश्यक है कि इस परम तत्व तक हम सबकी पहुँच हो तथा हम सभी कदम ताल मिलाकर चल सकें।

मानव की विजय यात्रा में यदि उसके शरीरबल के साथ उसका बुद्धिबल न जुड़ा होता तो वह अपनी विजयपताका कदापि नहीं फहरा पाता। किन्तु इस विश्व में मानव के अस्तित्व के बने रहने के लिए केवल शरीरबल एवं बुद्धिबल ही पर्याप्त नहीं था बल्कि इसके साथ–साथ नीतिबल और सामाजिक मर्यादा ने भी मानव सभ्यता को आधार प्रदान किया। सामाजिक और नैतिक जीवन मानव सभ्यता के विभिन्न अंग है जो कि वातावरण, शिक्षा एवं संस्कार द्वारा पालित–पोषित होते है। संस्कारों में घुली–मिली शिक्षा जो हमारे जीवन में शांति का बीज रोप सकती है वही शांति शिक्षा कहलाती है। सद्भाव, प्रेम, सहनशीलता, करूणा, क्षमा ये सारे मूल्य मिलकर शांति तत्व की स्थापना करते हैं और व्यक्ति के अन्दर इन सारे मूल्यों का विकास करने वाली शिक्षा शांति का ही रूप होती है। हम भाग्यशाली हैं कि हमने भारत जैसे देश में जन्म लिया है जहाँ हमें विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संगीत और विविध प्रकार के भोजन के अनुभव का अवसर बहुत सुगमता से मिल जाता है जिससे मस्तिक की व्यापकता बढ़ती है तथा संकीर्णता घटती है। यहीं से शांति की नींव पड़ जाती है और इस नींव को पुख्ता बनाने के लिए आवश्यक है कि हम अपने बच्चों को सामान्य विद्यालयों में भेजें न कि किसी सम्प्रदाय विशेष, वर्ग विशेष, या फिर बालकों की विशिष्टता के आधार पर। सामान्य विद्यालयों में रहकर ही हमारे बच्चे आपस में भाईचारा, प्रेम, करूणा, क्षमा, परोपकार, सहिष्णुता का पाठ नैसर्गिक रूप से सीखते हैं, यही शांति का आधार है।

आचार्य विनोबा जी के द्वारा दी गई शांति शिक्षा का लक्ष्य विश्व में शांति स्थापित करना है। आचार्य विनोबा महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे, अतः उन्होंने गाँधी जी के समान सत्य,

अहिंसा, प्रेम, अपरिग्रह, मानव सेवा आदि को अपना जीवन मूल्य बनाया। उनके अनुसार आत्मज्ञान और विज्ञान के संयोग से सामूहिक अहिंसा का जन्म हुआ है। इसको वे गाँधी ज्ञान कहते थे। उनका मानना था कि जिस प्रकार हाईड्रोजन और ऑक्सीजन मिलकर पानी बनाते है ठीक वैसे ही आत्मज्ञान और विज्ञान मिलकर ''सर्वोदय'' या ''साम्ययोग'' बनाते है और इसी में सम्पूर्ण विश्व का हित निहित है।

आचार्य विनोबा जी ने ब्रह्मविद्या मन्दिर की स्थापना की। उनका मानना था कि ब्रह्मविद्या (आध्यात्मिक विज्ञान) के आधार पर समाज की भव्य इमारत बनाई जा सकेगी, जिससें मानव–मानव के बीच में किसी भी प्रकार की शारीरिक, मानसिक दीवारें नहीं होगी और प्रत्येक को उसके सामर्थ्य और बुद्धिबल के अनुसार विकास का समान अवसर दिया जायेगा। यहीं विश्व शांति का मूल है, और इसी आधार पर बालक को शिक्षित करने, उसे पुष्पित–पल्लवित होने के अवसर देने से ही विश्व शांति के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकेगा।

आचार्य विनोबा जी का मानना था कि विश्व में शांति की संकल्पना की पूर्ति हेतु शांति शिक्षा एक अनिवार्य साधन है, इस साधन हेतु उन्होंने 11 व्रतों को आदर्श के रूप में सम्मिलित करने का सुझाव दिया। आचार्य द्वारा दिये गये 11 व्रत निम्नलिखित प्रकार से हैं:

''अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, असंग्रह।
शरीर, श्रम, अस्वाद, सर्वत्र, भयवर्जन
सर्वधर्मी समानत्व सेवावीं नम्रत्वे व्रत निश्चये।।''

आचार्य विनोबा की मानें तो शांति शिक्षा नैतिक शिक्षा के पथ पर चलकर ही प्रदान की जा सकती है और नैतिक शिक्षा आध्यात्मिक साहित्य के आश्रय से ही बालकों तक पहुँचाई जा सकती है। उनका मानना था कि विश्व में शांति तब तक स्थापित नहीं की जा सकती है जब तक मनुष्य का मन शान्त न हो और मन को शान्त करने में आध्यात्मिक साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता हैं।

उनके अनुसार शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों को सभी धर्मों का सार सिखाया जाये। वे कहते थे ''धार्मिक शिक्षण दिलचस्प विषय है, पर आज 'धर्म' शब्द का अर्थ बड़ा ही संकुचित और समाजभंजक बन गया है। यही कारण है कि विचारशील लोगों का सुझाव पाठशालाओं में धर्म शिक्षण न देने के पक्ष में है। मेरी दृष्टि से सच्चा धर्म शिक्षण साहित्य का विषय ही नहीं है, चरित्र–निष्ठा, ईश्वर विषयक श्रद्धा और देह से पृथक आत्मा का भाव, यह धर्म का सार है। ''शांति शिक्षा के संबंध में वे स्वीकार करते थे कि शिक्षा में धर्मों का प्रवेश हो। इस दृष्टि से उन्होंने सिफारिश भी की थी कि सभी शिक्षण संस्थानों में विद्यार्थियों को सब धर्मों का सार सिखाया जाये। उनके अनुसार सेक्युलॉरिज्म का अर्थ धर्म–निरपेक्षता नहीं है, वास्तव में

उसका भावात्मक अर्थ ''सब धर्मों के लिये समान भाव'' होना चाहिए। वे मानते थे कि शांति शिक्षा बालक को संस्कारी बनाती है और यदि शिक्षा के क्षेत्र से सब धर्मों को हटा देंगे तो बालक संस्कारी कैसे बनेगा? आचार्य विनोबा शांति शिक्षा के लिए मानते थे कि बालकों को सुन्दर कहानियां सुनाने से उनमें आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा उत्पन्न होती है जो समस्त लोक में शांति स्थापित करने में पूर्णतः सक्षम है। वे कहते थे कि ऐसे में सर्वप्रथम सवाल आता है कि वे कहानियाँ कौन सी होंगी जो बालकों के मन पर आमिट प्रभाव डाल सकें। इस विषय में उनका मानना था कि बालकों में अच्छे संस्कार विकसित करने वाली कोई भी कहानी चल सकती है परन्तु जो कहानियाँ प्राचीन काल से चली आ रहीं हैं उनका अधिक असर होगा जैसा कि होम्योपैथी की औषधि में होता है। वे दो मिसाल देते थे – एक ध्रुव की कहानी और दूसरी प्रह्लाद की। ये दोनों कहानियां कम से कम पाँच हजार साल से कहीं जा रहीं हैं। इसलिए उनकी पोटेन्सी बढ़ी है। इस युग की कहानियाँ भी कह सकते हैं, पर प्राचीन कहानियों की शक्ति ज्यादा होगी।''

कहानियों के सन्दर्भ में वे एक महत्वपूर्ण बात और कहते थे कि बालकों को कहानियाँ सुनाते समय एक बिन्दु सहज ही ध्यान में रखना चाहिए कि जो कहानियाँ बालकों को सुनायें वे एक ही धर्म की नहीं होनी चाहिए, अनेक धर्मों की कहानियों को सुनाना चाहिए। ईसा मसीह, मुहम्मद पैगम्बर की कहानियाँ कहनी चाहिए। भिन्न–भिन्न धर्मों के साधु–सन्तों की कहानियाँ, सेण्ट फ्रॉसिस की कहानियों को सुनाना चाहिए। बच्चे हिन्दु, मुसलमान, ईसाई नहीं होते, वे परमात्मा के बच्चे होते हैं। यानि कि आध्यात्मिक होते हैं, धार्मिक, पांथिक नहीं होते। हिन्दुस्तान का वैभव है कि अनेक धर्मों के लोग यहाँ हैं, इसलिए इस दृष्टि से हमारा चिन्तन होना चाहिए।'' उनके अनुसार इसी आधार पर शांति शिक्षा का विकास किया जाना चाहिए।

आचार्य विनोबा शांति हेतु सहयोग की भावना की सहायता लेने की बात कहते हैं। उनके अनुसार इस सहयोग के अन्दर सारा समाजशास्त्र, मानवशास्त्र इत्यादि आ जायेगा। वे कहते थे कि जीवन में शांति के लिए सबसे महत्वपूर्ण है सहजीवन जीने की कला आये। सहजीवन को कला इसलिए कहा गया है क्योंकि यह कोई आसान कार्य नहीं है जिसे कहा और हो गया। बल्कि सच यह है कि यह किसी योग से कम नहीं है। हम सबको इकट्ठा जीना है। सहजीवन में अनेक भाषायें, अनेक प्रान्त इत्यादि–इत्यादि भेद सब खत्म करने होंगे। वे समझाते हुए कहते थे कि कल हमको किसी ने कहा 'हम भारतीय हैं' ऐसी भावना होनी चाहिए न कि 'हम महाराष्ट्रीय हैं', गुजराती हैं, तमिल हैं' इत्यादि–इत्यादि। मैंने कहा यह मिनिमम जरूरत है, 'हम भारतीय हैं।' यह सबसे छोटी मांग है। अधिक से अधिक भी नहीं, इष्टतम भी नहीं। यह कम से कम है। वास्तव में जरूरी है विश्वमानव – हम विश्वमानव हैं। आचार्य इसी युक्ति को आगे समझाते हैं कि हम गाना गाते हैं, भारत के गीत, प्रान्तों के गीत। लेकिन हमारे वेद में पृथ्वी सूक्त है, भारतसूक्त नहीं। ''नाना धर्माणां प्रथिवीं विवाचसम्'' – यह हमारी पृथ्वी,

इसमें अनेक धर्म हैं और विवाचम् अनेक वाणियाँ, अनेक भाषायें हैं, तो अनेक भाषाओं से भरी और अनेक धर्मों से भरी है हमारी यह पृथ्वी। अतः हमको विश्वमानव बनना चाहिए। इसीलिए हमें ''जय जगत'' का उद्घोष मिला। वे कहते थे कि ''जय जगत'' से कम चीज नही चलेगी। लेकिन अगर कम से कम चाहिए तो हम भारतीय हैं यह ठीक है माफ है। अर्थात् आचार्य विनोबा जी के अनुसार शांति अपने अन्दर विश्वबन्धुत्व की' भावना समाहित किये हुए है।

आचार्य विनोबा भावे शांति शिक्षा में इतिहास विषय को सम्मिलित करने की बात भी करते थे किन्तु साथ ही वे इतिहास को सम्मिलित करने में अति सावधान होने की बात भी कहते थे। वे समझाते थे कि हमारा सारा प्राचीन इतिहास गौरवशाली ही है ऐसा नहीं हैं, उसमें अनेक दोश भी हैं। जिन्होंने हमारे जीवन एवं समाज पर प्रभाव डाला है उनकी जानकारी देनी चाहिए। वे ध्रुव तारे का उदाहरण देते हुए समझाते हैं कि ध्रुव नामक बालक ने तपस्या की। उस तपश्चर्या ने उस छोटे से बालक को एक सर्वोच्च स्थान पर आरूढ़ किया। वे एक उदाहरण देते हैं कि विश्वमित्र के क्रोधित होने पर ऋषि वशिष्ठ क्रोधित नही हुए थे। एक बार विश्वमित्र ने ऋषि वशिष्ठ का वध करने की सोची और उन्हें मारने चल पड़े। पूर्णिमा की रात थी, ऋषि वशिष्ठ अपनी पत्नी अरून्धती के साथ चाँदनी में बैठकर बाते कर रहे थे। ऋषि विश्वमित्र छुपकर उनकी बातें सुनने लगे।

अरून्धती ने वशिष्ठ से कहा – चाँदनी कितनी सुहावनी है। वशिष्ठ बोले – ठीक विश्वामित्र की तपस्या जैसी, अत्यन्त मनोहर। वार्तालाप सुनते ही विश्वमित्र का क्रोध शान्त हो गया और एकदम सामने उपस्थिति होकर उन्होंने वशिष्ठ को साष्टांग प्रणाम किया। वशिष्ठ विश्वमित्र को राजर्षि कहा करते थे। लेकिन विश्वमित्र के नमस्कार करने के साथ ही ऋषि विशष्ट ने कहा – ब्रह्मर्षे उत्तिष्ठ–ब्रह्मार्षि, उठो।

सारांश हमें ऋषि वशिष्ठ का सारा इतिहास नहीं चाहिए। शांति शिक्षा हेतु केवल इतनी ही कहानी पर्याप्त है। क्योंकि इससे नैतिक सद्गुण आयेंगे। उनके अनुसार शांति शिक्षा हेतु इतिहास के रूप में जीवन भर उपकार में रत् रहने वाले व्यक्तियों के विषय में बताया जाना चाहिए, जो बालकों में प्रेंम, करूणा, दया, परोपकार आदि नैतिक भावनाओं का विकास कर पायेंगे, क्योंकि यही मूल्य शांति शिक्षा के महत्वपूर्ण घटक है।

आचार्य विनोबा जी का कहना था कि शांति में ब्रह्म शिक्षा को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। ब्रह्म–शिक्षा से आत्मा का ज्ञान होता है। बालक शरीर, मन और इंन्द्रियों पर नियंत्रण करना सीख सकेगा। सम्पूर्ण विश्व के प्रति प्रेम उत्पन्न होगा, स्व–पर का भेद मिट सकेगा। वह कहेगा कि यह घर, यह जमीन, यह संपत्ति, 'सबकी' है। इसी से सम्पूर्ण विश्व में शांति शिक्षा की परिकल्पना पूर्ण हो सकती है।

आचार्य विनोबा ने 'नई तालीम' के अन्तर्गत बालकों में सामाजिकता के विकास की बात भी कही है जो कि शांति शिक्षा का एक महत्वपूर्ण तत्व है। वे बताते हैं कि आज का सामाजिक ढ़ांचा अनेक प्रकार के भेदों पर खड़ा है। इसलिए नयी तालीम से हिन्दुस्तान के सब बच्चे एक साथ खाएंगे, खेलेंगे और पढ़ेंगे। हम भिन्न–भिन्न धर्मों की बुराइयों को छोड़ेंगे और अच्छाइयों को अपनायेंगे। यह हमारे समाज में शांति स्थापित करने की दिशा में बहुत सहायक सिद्ध होगा।

वे कहते थे कि शांति पक्षी पर नहीं, आपके सिर में है। अर्थात् आपका शरीर एक पेड़ ही है। लेकिन ''उर्ध्वमूल अधःशाखम्'', अर्थात् उसका मूल (दिमाग) ऊपर और शाखा (हाथ पैर) नीचे हैं। शांति पक्षी के दो पंख हैं, उत्पादन और प्रेम, आर्थिक और परमार्थिक, विज्ञान और आत्मज्ञान।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि आचार्य विनोबा जी के चिन्तन में निहित शांति संबंधी विचार शांति शिक्षा को आधार देता है। उनके अनुसार आज के तनावपूर्ण समाज में स्वयं को समाज के साथ सामंजस्य बनाये रखने के लिए शांति शिक्षा की महती आवश्यकता है और इस आवश्यकता की पूर्ति में विद्यालय के साथ–साथ परिवार की भी अपनी एक विशेष भूमिका होती है। परिवार में जब बालक होता है, तब वह अपने माता–पिता, चाचा, दादा–दादी आदि के सम्पर्क में रहता है। ऐसे में उनकी पूर्ण जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने बालकों में नैतिक मूल्यों को विकसित करें क्योंकि बाद में यही नैतिक मूल्य सुसंस्कार का रूप लेकर बालक का जीवन संवारते है। इन्हीं संस्कारों के साथ बालक विद्यालय में प्रवेश करता है, अब विद्यालय का पूरा उत्तरदायित्व बनता है कि वह अपने बालक को इस योग्य बनाये कि वह तनावपूर्ण समाज से न केवल सामंजस्य ही बनाये अपितु इस समाज का शुद्धीकरकण भी करे।

आचार्य विनोबा जी आगे कहते हैं कि शिक्षक से यह अपेक्षा की जाती है कि उससे विद्यार्थी को अपने समग्र विकास की सामग्री मिले। मन की जितनी भी शक्तियाँ हैं वे सब ऋषि–मुनियों ने हमें समझा दी हैं। हमें अनुभवी पुरूषों ने सिखलाया है कि मुख्य शिक्षण वही है जिससे हम अपने आपको मन और शरीर से भिन्न मान सकें। स्वयं की यह पहचान ही सर्वोपरि गुण है। इसके लिए उसे अपने आप पर विजय प्राप्त करनी पड़ती है। इसी से बालक का चित्त शान्त होता है और अपने समाज को सुखी और समृद्ध बनने की दिशा में अग्रसर होत पाता है। आचार्य विनोबा जी के दृष्टिकोण से यही शांति शिक्षा का मूल है जो हम सबको इस जटिल जीवन जीने की कला कला सिखाता है। सार रूप में यदि कहें तो आचार्य विनोबा जी के अनुसार इस तनावपूर्ण संसार में स्वयं को अवसाद ग्रस्त किये बिना जीवन जीने की कला की शिक्षा ही शांति शिक्षा है।

आचार्य विनोबा जी के सिद्धान्तों में निहित शांति शिक्षा की अवधारणा पर विचार करें तो उसके उसके उद्देश्य निम्नवत् दृष्टिगत होते हैं:

शिक्षा के उद्देश्य

1. व्रत स्नातक बनाना: आचार्य विनोबा जी के अनुसार जब कोई विद्यार्थी गुरू के पास रहकर विद्यार्जन करता था तो वह केवल विद्या स्नातक कहा जाता था। उसे पूर्ण स्नातक बनने के लिए विद्या–स्नातक होने के साथ ही उसे व्रत स्नातक भी होना पड़ता था। व्रत–स्नातक से तात्पर्य आत्म–दमन तथा आत्म–नियमन की कला है। अतः आचार्य विनोबा के दर्शन के अनुसार शांति शिक्षा का प्रथम उद्देश्य छात्र को स्व–नियंत्रण की कला में पारंगत करना है, यह शांति के परिदृश्य की अनिवार्य शर्त है। इस तरह जब विद्यार्थी तपकर संसार में प्रवेश करता है तो वह आत्म विश्वास से भरा होता है और सांसारिक समस्याओं का एक वीर योद्धा के समान सामना करता है।

2. विनम्रता का विकासः यह सर्वविदित है कि विद्या से विनय का जन्म होता है और शांति शिक्षा का दूसरा उद्देश्य बालक को विनयी बनाना है। आचार्य विनोबा जी कहते हैं कि एक विनयी विद्यार्थी ही शान्त एवं सुरक्षित समाज की नींव रख सकता है। वे कहते थे कि हमें सदा गुण ग्रहण करने चाहिए। आचार्य विनोबा जी समझाते थे कि हम सब में असंख्य दोष होते हैं और एक–आध ही गुण होते हैं। दोष देह से संबंधित होते हैं जबकि गुण का सम्बन्ध आत्मा से होता है। यह देह तो अन्त में भस्म या नष्ट हो जाता है, हमारे समस्त दोष भी उसके साथ जल जाते हैं किन्तु मनुष्य के गुण ही उसकी आत्मा का मुख्य स्वरूप होता है। अतः हमें हमेशा दूसरों के गुण ग्रहण करने चाहिए।

3. धैर्य का विकासः आचार्य विनोबा जी का मानना था कि विश्व शांति की स्थापना तभी सम्भव हो सकती है जब हमारे बालकों को धैर्य का पाठ पढ़ाया जाये। धैर्य शिक्षा शांति शिक्षा का ही एक आयाम है। अतः शिक्षा का तीसरा उद्देश्य धैर्य का विकास है। धैर्य के पाठ के बिना शांति शिक्षा की संकल्पना नहीं की जा सकती है। वे कहते थे कि जब तक कष्ट सहने की तैयारी नहीं होती तब तक लाभ दिखाई नहीं देता। लाभ की इमारत कष्ट की धूप में ही बनती है और इस कष्ट की धूप में पकने के लिए धैर्य परम् आवश्यक तत्व है। इस तत्व के अभाव में हमारा व्यक्तित्व असंतुलित हो सकता है और हम भग्नाशा के शिकार हो सकते हैं। यहीं से हमारे जीवन में अशांति का प्रवेश हो जाता है और फिर वह समाज में पहुँच कर पूरे वातावरण को दूषित कर सकता है। अतः शांति शिक्षा के द्वारा बालकों में धैर्य का विकास आवश्यक है।

4. सहयोग का पाठः आचार्य विनोबा जी का मानना था कि शांति शिक्षा के द्वारा हमारे छात्रों को सहयोग का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए जिससें उनमें सहयोग की भावना पनप सके और फिर वह विस्तृत होकर विश्व शांति का रूप ले सके। इस प्रकार आचार्य विनोबा के अनुसार शांति शिक्षा का चौथा उद्देश्य छात्रों में सहयोग के प्रति संवेदनशीलता को जाग्रत करना है। वे बताते हैं कि हमारे वेदों में भी विश्व शांति की ही कामना की गई है न कि किसी क्षेत्र विशेष की। उनका कहना था कि समाज में काम करने के दो तरीके, दो मार्ग होते हैं। एक मार्ग है ऊपर वालों की तरफ देखकर, संघर्ष की भावना और बल से अपनी ताकत से उनको एक सतह पर लाना। इसमें मत्सर की भावना होती है। दूसरा मार्ग है – अपने से नीचे वालों की तरफ देखकर जो ज्यादा दुःखी है, उनके पास मदद के लिए पहुँचना – जैसे पानी नीचे की तरफ बहता है, वैसे ही कोई अपने से ज्यादा दुःखी की ओर दौड़े। दरअसल यह दूसरा मार्ग नहीं, बल्कि एक मात्र सही मार्ग है। बाकी अन्य मार्ग हैं। इससे समाज में जो समत्व आयेगा वह करूणामूलक होगा।

5. योग शिक्षा : आचार्य विनोबा ने शांति शिक्षा हेतु पाँचवां उद्देश्य योग को छात्रों के जीवन का महत्वपर्णू अंग बनाना बताया था। आचार्य विनोबा कहते थे कि योग का अर्थ आसन लगाना या व्यायाम करना ही नहीं है, अपितु चित्त पर अंकुश कैसे रखना, इन्द्रियों पर कैसे सत्ता रखना, मन पर कैसे काबू पाना, वाणी पर सत्ता प्राप्त करना योग का सच्चा अर्थ है। समाज में शांति के लिए चित्त पर अंकुश रखने तथा उसे स्थिर रखने जिसे गीता स्थित कहती है, ऐसी स्थित प्रज्ञा की बहुत आवश्यकता है।

6. धार्मिक भावना का विकासः आचार्य विनोबा ने शांति शिक्षा का छठा उद्देश्य छात्रों में धार्मिक भावना का विकास बताया। वे कहते थे कि धार्मिक शिक्षण दिलचस्प विषय है। उनका कहना था कि सच्चा धर्म शिक्षण साहित्य का विषय ही नहीं है बल्कि, निष्ठा, ईश्वर, विषयक श्रद्धा और देह से पृथक आत्मा का ज्ञान है, यही धर्म का सार है और वह सतपुरूषों की संगति से मिलता है। वे स्वीकार करते थे कि धार्मिक शिक्षा का विषय अत्यन्त संवेदशील है। हमारे देश में अनेक धर्म होने के कारण मुश्किल होती है। इसके लिये यह करना होगा कि शिक्षा का जिम्मा स्टेट को नहीं उठाना चाहिए, वह ज्ञानियों के जिम्मे है। उनका मानना था कि धार्मिक भावना आध्यात्मिक विकास की प्रथम सीढ़ी है और चित्त को अनुशासित करने के साथ शांति प्रदान करने का काम भी करती है। यहीं से विश्व–शांति की भावना जाग्रत होती है।

पाठ्यक्रम

1. योग शिक्षाः विनोबा जी मानते थे कि योग शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य भाग बनाना चाहिए। योग छात्र को अनुशासित बनाता है। वे कहते थे कि योग कर्म चक्र पर अंकुश रखता है, इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण का पाठ सिखाता है। वे कहते थे कि निष्काम कर्म, भक्ति और ज्ञान तीनों से जुड़ने पर ही योग बनता है। अर्थात् हमार बालक में निष्काम कर्म, शक्ति और ज्ञान, तीनों समान रूप से विकसित होने पर ही उसमें योग का समाहार होगा और वह शांतिपथ पर चल पड़ेगा।
2. उद्योग शिक्षाः वे शिक्षा में दूसरे विषय के रूप में उद्योग की बात करते थे। वे कहते थे कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य गुण का विकास होना चाहिए, परन्तु बिना उद्योग के न गुण का विकास होता है, न गुणों की परख होती है। उद्योग शब्द का अर्थ उत्योग अर्थात् ऊँचा योग है। विनोबा जी के अनुसार हमारे विद्यालयों के साथ ही तीन एकड़ खेत जुड़ा होना चाहिए। बच्चों को और शिक्षकों को थोड़ी देर एक साथ खेती पर काम करना चाहिए। प्रकृति के साथ सम्बन्ध होना अत्यन्त आवश्यक है। खेती के साथ हर मनुष्य का संबंध होना ही चाहिए।
3. धार्मिक शिक्षाः आचार्य विनोबा की इच्छा थी कि समाज में शांति की स्थापना के लिए पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा को प्रमुख स्थान देना चाहिए। इसके लिए पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत सभी धर्मों के अच्छे अंशो का समन्वय करना उचित होगा।
4. इतिहासः इतिहास हमें बताता है कि मानवीय जीवन के मूल्य किस प्रकार सिद्ध होते गए और कैसे सिद्ध हुआ करते हैं तथा हम कहाँ हैं और कैसे आकर पहुँचे। भूतकालीन अनुभवों से कुछ सीखने के लिए इतिहास का अध्ययन करना होता है। इतिहास हमें विवेक देता है कि एक राष्ट्र किसी से लड़े यह ठीक नहीं हैं क्योंकि युद्ध किसी भी हालत में ठीक नहीं है। इस तरह समाज का विवेक विकसित होता जाता है। हमारा विवेक बनाने में जिन–जिन व्यक्तियों का योगदान है, उनकी जानकारी इतिहास हमें देता है। विनोबा जी आगे बताते हैं कि बालकों को उतना ही इतिहास पढ़ाना चाहिए जो उनमें नैतिकता का विकास करे।
5. गाणितः आचार्य विनोबा गाणित को आध्यात्मिक खोज मानते थे। इसके लिए उन्होंने ''साम्यसूत्र'' का उल्लेख भी किया है। वे बताते हैं कि आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाये तो जो गिनतीपूर्वक सब कुछ करता है उसे दुखनाशन योग प्राप्त होता है। फिर हिसाब से अरूचि क्यों हो? और हिसाब रखेंगे किन्तु देखेंगे नहीं ऐसा कहा जाये तो वह समाजविरोधी बात मानी जायेगी। वे कहते हैं कि हिसाब देना यानि ज्ञान को सामुदायिक करना है। अतः इस प्रकार देखें तो कहा जा सकता है कि शांति शिक्षा के पाठ्यक्रम में गाणित का अपना विशिष्ट स्थान है।
6. संगीतः आचार्य विनोबा जी की मानें तो शांति शिक्षा के पाठ्यक्रम में संगीत का समावेश आवश्यक है क्योंकि संगीत में ईश्वरीय गुण विद्यमान होता है और संगीत बालक में दैवीय गुण विकसित करने में सक्षम होता है।

7. कलाः वे कहते थे कि हमारे शिक्षण के पाठ्यक्रम में पहली कक्षा से ही चित्रकला को स्थान दिया जाना चाहिए। वे चित्रकला के शिक्षण के साथ–साथ बालक में चित्रकला दृष्टि के विकास पर भी बल देते थे। उनका कहना था कि जिसे चित्रकला की दृष्टि प्राप्त है वह व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में कभी भी बेढंगा व्यवहार नहीं करेगा। चित्रकला से बच्चों की सिर्फ उंगलियों में सिफत आना ही काफी नहीं, उनके नेत्रों को भी चित्रकला में दक्ष होना चाहिए।

8. संस्कृतः आचार्य विनोबा की संस्कृत में दृढ़ आस्था थी। वे कहते थे कि संस्कृत अध्यात्म की भाषा है। संस्कृत में अध्यात्म विद्या है। मैं चाहता हूँ कि लोग संस्कृत सीखें। संस्कृत में वेद और उपनिषद् हैं, गीता है, ब्रह्मसूत्र, सांख्यसूत्र, योगसूत्र हैं, रामायण, महाभारत, पुराण, अनेक भाष्य आदि असंख्य ग्रन्थ उपल्बध हैं। उनमें आत्मा का विचार दिया गया है। उनमें मनुष्य को निर्भय बनाने की पर्याप्त शक्ति निहित है। संस्कृत के दोहों में ''विश्वमानव'' का विचार दिया गया है। परिणामस्वरूप अहिंसा का विचार बहुत सूक्ष्म रीति से संस्कृत से विकसित हुआ। संस्कृत के शब्दों में तिरस्कार का भाव नहीं होता। उसके शब्दों में अत्यन्त आदर और सम्मान निहित होता है। उनका मानना था कि विद्या की जननी संस्कृत मानव–धर्म की भाषा है।

शिक्षण विधि

1. ब्रेड लेबरः शरीर का पोषण श्रम से करना चाहिए। इसी को ब्रेड लेबर कहते हैं। इसी को भगवत गीता में 'यज्ञ' नाम दिया गया है। इसी का जिक्र ईसा ने किया है कि अपने पसीने से जो रोटी कमाता है वह ब्रेड लेबर है। ''नयी तालीम'' में यह एक मूलभूत सिद्धान्त है। अतः आचार्य विनोबा के अनुसार विद्यालयों में छात्रों से शरीर श्रम अवश्य करवाने का प्रावधान किया जाना चाहिए।

2. प्रार्थनाः आचार्य विनोबा जी के अनुसार प्रार्थना बढ़ी ही सुन्दर क्रिया है। इस क्रिया से चित्त का प्रक्षालन होता है, वह धुल जाता है। सामूहिक रीति से सभी पाँच मिनट शान्त बैठें और परमेश्वर का स्मरण करें? परमेश्वर के सामने हृदय खोलकर रख दें। उनके अनुसार इससे मन में एक शक्ति का संचार होता है जो छात्र के मन को शान्त रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। अतः शांति शिक्षा हेतु प्रार्थना एक महत्वपूर्ण विधि है।

3. भ्रमण यात्राः आचार्य विनोबा जी कहते थे कि हमारे विद्यालयों में छात्रों के व्यक्तित्व के विकास के लिए यात्रा का प्रबन्ध करना चाहिए। वे पैदल यात्रा के विशेष पक्षकार थे। वे कहते थे कि वे स्थान यात्रा के योग्य हैं जहाँ–जहाँ सज्जन लोग निवास करते हैं। इससे छात्रों को सज्जन संगति का लाभ मिलता है।

4. कंठस्थ करनाः आचार्य विनोबा कहते थे कि बच्चों को प्रथम दिन से ही उपनिषद की कहानियाँ एवं उत्तम श्लोक कंठस्थ करना सिखाना चाहिए। वे कहते थे कि कुछ

लोगों का कहना है कि कंठस्थ करना गलता है। लेकिन रस्किन को पाँच साल की उम्र में ही सारी ''बाइबिल'' कंठस्थ हो गई थी और उसी से इसका सारा जीवन बना है। उनका कहना था कि विद्यार्थियों को उत्तम अर्थ–ज्ञान से युक्त कम से कम दस हजार श्लोक तो कंठस्थ रहने चाहिए। विद्या कंठगत होनी चाहिए। क्योंकि विषय के बोध का प्रथम पायदान कंठगत ही है।

5. प्रत्यक्ष जीवन द्वारा ज्ञानः आचार्य विनोबा जी का मानना था कि बालकों को जो ज्ञान दिया जाये इसको प्रत्यक्ष वस्तु से संबंधित करके दिया जाये। बच्चे को पर्याय पद बताते समय पदार्थ भी बताना चाहिए। यदि घोड़े के विषय में बच्चे को बताना है तो उसे घोड़ा दिखाया जाना भी आवश्यक होगा। उन्होंने कहा था कि इस संसार में कोई मरता है, कोई जन्म लेता है, कोई बीमार होता है, कोई अच्छा होता है, ये सभी हमें कुछ बताते हैं। ज्ञान हमारे चारों ओर भरा पड़ा है।

अध्यापक

आचार्य विनोबा जी का मानना था कि शिक्षकों का विद्यार्थियों पर प्रेम होना चाहिए, वात्सल्य और अनुराग होना चाहिए। शिक्षकों का मूल मंत्र 'शिष्यदेवो भव' होना चाहिए जिसका तात्पर्य है कि शिष्य ही हमारे देव हैं और उनकी भक्तिपूर्वक एकनिष्ठा से सेवा करना ही शिक्षक का प्रमुख कर्त्तव्य। वे कहते थे कि विद्यार्थियों के लिए गुरू सेवा और शिक्षकों के लिए विद्यार्थी सेवा पर्याप्त ध्येय, एकमात्र ध्येय और अनन्य होना चाहिए। दोनों मिलकर परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं ऐसी अनुभूति बनानी चाहिए।

शिक्षकों को निरन्तर अध्यनशील होना चाहिए। रोज नया अध्ययन जारी रहे और ज्ञान की वृद्धि होती चली जाये। शिक्षक को अपनी ज्ञानशक्ति पर विश्वास होना चाहिए। शिक्षक तो ज्ञान का समुद्र होता है। उसे निरन्तर ज्ञान की उपासना करते रहना चाहिए। शिक्षक के लिए निरन्तर चिन्तशीलता, ज्ञानवृद्धि के साथ–साथ अपने शिष्यों के लिए अत्यन्त प्रेम, वात्सल्य भी होना आवश्यक है।

शिक्षकों को तटस्थ होना चाहिए। वे कहते थे कि तटस्थ वृत्ति के बिना सृष्टि का रहस्य समझ पाना सम्भव नहीं है। शिक्षकों को दलीय राजनीति से भी दूर रहना चाहिए। अगर शिक्षक भी राजनीति के रंग में रंगे हों तथा उनके सिर पर राजनीति का वरदहस्त हो तब समझाना चाहिए कि गंगा मैया समुद्र की शरण गयी, लेकिन समुद्र ने उनको स्वीकार नहीं किया, तो जो हालत गंगाा मैया की होगी, वही हालत विद्या की होगी। आचार्य के अनुसार शिक्षक की आध्यात्मिक हैसियत है, उसके चित्त पर, बुद्धि पर कोई बोझ नहीं होना चाहिए।

आचार्य विनोबा के अनुसार, शिक्षकों को हम् (मैं कौन हूँ) का जवाब ढूढ़ लेना चाहिए। शिक्षक होने के साथ–साथ यदि कुछ दूसरा होने की स्थिति रहेगी तो शिक्षक के कार्य के

साथ न्याय करना संभव नहीं होगा। वे कहते थे कि शिक्षक को अनुभूति होनी चाहिए कि मैं सबसे पहले शिक्षक हूँ और शिक्षण एक श्रेष्ठ कार्य है।

'गुरू मुखि' नादं गुरूमुखि वेदं।' नाद और वेद का अपना एक महत्व है। फिर भी जब वे गुरू के मुख से आते हैं तब उनका महत्व बढ़ जाता है। ध्यान से जो तालीम मिलती है उसे 'नाद' और शास्त्रों के ज्ञान को 'वेद' कहा जाता है। गुरू के मुँह से ही नाद और वेद का ज्ञान प्राप्त होना चाहिए।

आचार्य विनोबा के अनुसार शांति–शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों को यदि आचार्य कहें तो अधिक उपयुक्त होगा। आचार्य आचारवान। स्वयं आदर्श जीवन का आचरण करते हुए राष्ट्र से उसका आचरण करा लेने वाला ही आचार्च है। राष्ट्र का काम हमारे सामने है। आज हिन्दुस्तान की नयी रचना करनी है। आचारवान शिक्षकों के बिना यह सम्भव नहीं है। आचार्य विनोबा शिक्षक को भारत का 'शांति सैनिक' कहकर बुलाते थे। वे कहते थे कि शांति स्थापित करने का सर्वोत्तम शस्त्र हमारे पास है शिक्षा और ज्ञान। इससे बढ़कर शांति स्थापना का शस्त्र क्या हो सकता है। उनके अनुसार, समाज में व्याप्त अशांति का दमन तो कानून व्यवस्था कर सकती है किन्तु अशांति का शमन तो शिक्षक ही कर सकते हैं। शिक्षक समाज को एक विचार देते है, विचार परिवर्तन, हृदय परिवर्तन और जीवन परिवर्तन की दिशा दिखा सकते हैं। समाज में कहीं अशांति है तो शिक्षक अपने विचार एवं नैतिक शक्ति द्वारा अशांति का शमन करें, ताकि सरकार की दण्डशक्ति को अशांति दमन के लिए मौका ही न मिले। इसीलिए उन्होंने शिक्षकों का परिचय शांति–सैनिक संज्ञा के द्वारा दिया है। वे कहते थे कि अशांति शमन के लिए सब आचार्यों को एकत्र होकर व्यापक योजना बनानी होगी। वे कहते थे कि शिक्षक–विभाग को अशांति–शमन–विभाग कहा जाना चाहिए। उनके अनुसार आचार्य कुल का सर्वप्रथम कार्यक्रम शांति सेवा ही होनी चाहिए।

छात्र

आचार्य विनोबा छात्र के सम्बन्ध में मानते थे कि छात्र का मस्तिक स्वतंत्र होना चाहिए। छात्र को परिपूर्ण स्वतंत्रता का अधिकार है। वे कहते थे कि बौद्धिक स्वतंत्रता के साथ–साथ छात्रों में श्रद्धा की भी उतनी आवश्यकता है क्योंकि ज्ञान प्राप्ति के लिए श्रद्धा एक बुनियादी आवश्यकता है। ज्ञान का आरम्भ ही श्रद्धा से होता है और समाप्ति स्वतंत्र चिन्तन से होती है। इसलिए छात्र को चिन्तन–स्वातंत्रय का अपना अधिकार कभी नहीं खोना चाहिए।

आचार्य विनोबा ने छात्र के विषय में आगे बताया कि स्वयं पर नियंत्रण रखना छात्र का कर्तव्य है। स्वतंत्रता को अपने हाथ में वही रख सकेगा जिसका स्वयं पर नियंत्रण होगा। छात्र को स्थितप्रज्ञ बनना चाहिए, उसको मन, इन्द्रिय बुद्धि आदि पर नियंत्रण रखना चाहिए।

छात्र–अवस्था में संयम की महान विद्या सीख लेनी चाहिए। वे कहते थे कि वर्षा का सारा पानी अलग–अलग दिशाओं में इधर–उधर बह जाये तो नदी नहीं बनेगी। नदी बनने के लिए नियत दिशा चाहिये। छात्रों को निरन्तर सेवा परायण रहना चाहिए। बिना सेवा के ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। उन्हें यह नहीं समझना चाहिए कि हम सेवा करते हैं, तो अध्ययन कैसे कैसे होगा? लेकिन यह विश्वास होना चाहिए कि सेवा से ही ज्ञान प्राप्त होता है।

आचार्य विनोबा कहते थे कि छात्र वह है, जिसको विद्या की लगन हो, जो निरन्तर चिन्तन, मनन करता हो। प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा शरीरिक परिश्रम करना चाहिए और उससे जो आय हो वह समाजोपयोगी काम में खर्च करनी चाहिए। अवकाश के दिनों में इर्द–गिर्द के गाँवों में जाकर सफाई या अन्य सामाजिक सेवा करनी चाहिए। छात्र को अपने से भिन्न धर्म, भाषा, जाति अथवा पंथ के किसी व्यक्ति को अपना मित्र बनाना चाहिए। इससे विभिन्न समुदाय के भेद खत्म करने का मार्ग मिल जायेगा। छात्रों को सुबह शाम आधा घण्टा व्यायाम करना चाहिए। 'जल्दी सोकर, जल्दी उठना'– उनके जीवन का सूत्र होना चाहिए।

वे छात्रों के अध्ययन के विषय में कहते थे कि छात्र को समाधिस्थ होकर नित्य निरन्तर थोड़ी देर तक किसी निश्चित विषय का अध्ययन करना चाहिए। उनके अनुसार 'समाधि' अध ययन का मुख्य तत्व है। जीवन की निश्चित दिशा तय कर लेनी चाहिए, अर्थात् वह कहाँ है और उसे कहाँ पहुँचना है। उस पर लक्ष्य उखे बिना इधर–उधर भटकते रहने से रास्ता तय नहीं हो पाता।

सारंश में उनके अनुसार गम्भीर अध्ययन का सूत्र है – 'अल्पमात्रा, सातत्य, समाधि, कर्मावकाश और निश्चित दिशा'।

विद्यालय

आचार्य विनोबा जी कहते थे कि विद्यालय में होने वाला प्रत्येक काम ज्ञान का साधन होना चाहिए। इसीलिए विद्यालय को सजाने की जरुरत है। इसके लिए अच्छे–अच्छे साधन जुटाने होंगे। इससे छात्रों में अपने विद्यालय के प्रति रागात्मक लगाव बढ़ेगा। वे ज्ञान प्राप्ति के लिए तत्पर होंगे। वे कहते थे कि विद्यालय में स्वावलम्बन हो। उनका सुझाव था कि बच्चे छः घण्टे मेहनत करके शरीर श्रम से रोटी कमायें और दो घण्टे उसके परिपोषक के रूप में उन्हें ज्ञान, विज्ञान की शिक्षा दी जाये। छात्रों पर खर्च न तो उनके माता–पिता करें और न ही विद्यालय, फिर चाहें वे अमीर के बच्चे हों या फिर गरीब के। ऐसा करने से ही सच्चा प्रयोग होगा और देश आगे बढ़ेगा।

वे आगे कहते थे कि हमारे विद्यालय ग्राम विकास और सेवा के केन्द्र होने चाहिए। यहीं से हमारे छात्रों में शांति का बीज पनपेगा। गाँव की प्रत्येक गतिविधि में विद्यालय की भूमिका

होनी चाहिए, चाहें वो गाँव का झगड़ा हो या कोई उत्सव हो। इस तरह गाँव का केंद्र बिन्दु विद्यालय बनेगा और जो चीज गाँव में है उसका विकास करेगा तथा जो चीज गाँव में नहीं है, विद्यालय उसकी स्थापना करेगा।

अनुशासन

अनुशासन के संदर्भ में आचार्य विनोबा कहा करते थे कि छात्रों में अनुशासन बाह्य रूप से न थोपा जाये बल्कि मूल्य परक कहानियों एंव मूल्य शिक्षा द्वारा स्वाभाविक रूप से शनैः शनैः बालक के मन को अनुशासित किया जाना चाहिए। अनुशासन स्थापित करने के लिए आध्यात्मिक शिक्षा भी दी जानी चाहिए। वे आगे कहते हैं कि हमारे प्राचीन ग्रन्थों ने 'विद्या' को 'विनय' नाम भी दिया है। शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी को 'विनीत' कहते हैं। इसलिए आदर्श शिक्षण का परिणाम विनय में जरूर आना चाहिए। परन्तु यह विनय गुलामी के रूप में नहीं बल्कि समाज की गलत कल्पनाओं का सामना करने के लिए खड़ा होना चाहिए।

आचार्य विनोबा छात्रों के लिये स्वयं अनुशासन की बात करते थे। वे कहते थे कि नयी तालीम छात्रों पर अनुशासन नहीं चलाती। छात्र को पूर्ण मुक्त रखना चाहती है। वे कहते थे कि विद्यार्थी को यदि किसी पर सबसे अधिक अधिकार है तो वह है उसकी स्वतंत्रता। ऐसी स्थिति में छात्रों में स्वयं अनुशासन की भावना जन्म लेगी तथा उस भावना का विकास हो पायेगा। आचार्य विनोबा कहते थे कि छात्र में अनुशासन का जन्म संस्कार से होना चाहिए। इस हेतु पहले घर में भक्ति का भाव सिखाया जाना चाहिए। इस दृष्टि से पूरे भारतवर्ष में कोई भी अशिक्षित या असंस्कृत नहीं होगा। हर एक को अपने–अपने घरों में शुद्ध संस्कार प्राप्त होंगे। संस्कार से जो अनुशासन पनपता है वह किसी और पद्धति से नहीं पनप सकेगा।

आचार्य विनोबा कहते थे कि 'मेरा सारा जीवन ही शिक्षण कार्य में बीता और बीत रहा है। कभी आत्म–शिक्षण चला, कभी विद्यार्थियों का शिक्षण।' अतः यह स्पष्ट है कि आचार्य विनोबा मूलतः एक शिक्षक ही थे। उनके अन्तर्मन में एक शिक्षक विद्यमान था। शिक्षण के सम्बन्ध में आचार्य कहा करते थे कि शिक्षक और छात्र, दोनों एक–दूसरे के आचरण से शिक्षा पाते हैं। दोनों विद्यार्थी हैं। जो दिया नहीं जाता वही शिक्षण है। जो लिया जाता है, जिसका हिसाब रखा जा सकता है या जिसका कुछ लेखा हो सकता है, वह शिक्षण नहीं है। जीवन ही शिक्षण है। 'सैलरी' का सच्चा हिसाब कागज पर नहीं शरीर पर दिखता है जो अनुभव में आया, खाया, पचा और रक्त में एकत्र हो गया, वहीं सच्चा शिक्षण है।

वस्तुतः दर्शन ही शिक्षण को संचालित करता है। आचार्य विनोबा का दर्शन शांति प्रेरित और साथ ही शांति उन्मुख था। वह पूरे परिदृश्य में शांति को ही स्थापित देखना चाहते थे और उनके इस स्वप्न की पूर्ति उनके द्वारा संकलित शांति शिक्षा से ही संभव है।

आचार्य विनोबा के शांति शिक्षा संबंधी दर्शन के उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विश्व को शांति की ओर अग्रसर करने में हमारे विद्यालयों एवं शिक्षकों के अधिक गम्भीर एवं सार्थक समर्पण की आवश्यकता है। हमारे विद्यालयों को कृत–संकल्प होकर छात्रों के अन्दर शांति सम्बन्धी मूल्यों–क्षमा, करूणा, सहयोग, सद्भावना, प्रेम आदि का विकास करना होगा। आचार्य विनोबा के अनुसार भावी पीढ़ी में इन नैतिक मूल्यों के हस्तान्तरण के बिना शांति शिक्षा को प्राप्त नहीं किया जा सकता है जो आज के आधुनिक क्रान्तिकारी, संघर्षयुक्त समाज की महती आवश्यकता है।

सदंर्भ

1. भटट्, मीराः सन्त विनोबा, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणासी, 1995, पृ. 3,8।
2. जोशी, बाबूरामः सन्त विनोबा भावे, नारायण पाठक सस्ता साहित्य प्रेस, अजमेर, 1993, पृ. 53।
3. वॉहसन, एफः इनसाक्लोपीडिया एण्ड डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन, आकाशदीप पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1981, पृ. 126,41।
4. विनोबा साहित्य 17 शिक्षा, स्त्री शक्ति, कार्यकर्त्ता – पाथेय और गाँधीः जैसा देखा समझा, परंधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा, लक्ष्मी नारायण देवस्थान वर्धा, 1997, पृ. 46, 47, 49, 65, 66, 67, 100, 1001, 130, 148, 149, 185, 188।
5. विनोबा साहित्य शेषामृतम्, परंधाम प्रकाशन, पवनार वर्धा, लक्ष्मी नारायण देवस्थान वर्धा, 2001, पृ. 49–50, 254–255, 273–276।

बहुत समय पूर्व जापान में एक जिले के जिलाधीश थे, चाईसेन। उनके हाथ में सरकार ने बहुत सत्ता दे रखी थी।

एक व्यापारी अपना कुछ बड़ा काम सरकार से निकालना चाहता था। इसके लिए जिलाधीश का सहयोग अपेक्षित था। व्यापारी अशर्फियों की थैली लेकर पहुंचा और बोला, ''यह भेट स्वीकार करें, मेरा काम कर दें। इस भेट की बात कोई भी नहीं जान पाएगा।''

चाईसेन ने कहा, ''यह कैसे हो सकता है कि कोई न जाने। आसमान, पष्थ्वी, मेरी आत्मा, तुम्हारी आत्मा और परमात्मा पॉच की जानकारी में जो बात आ गई, उस पाप का भेद खुल ही गया। कृपा कर अपनी अशर्फियां वापस ले जाइए, अपने कर्तत्व और उत्तरदायित्व को झूठलाना मेरे लिए किसी भी प्रलोभन के बदले संभव न हो सकेगा।

''आध्यात्मिक शिक्षा से मेरा आशय ह्रदय की तालीम से है इसलिए मस्तिष्क का ठीक और चहुंमुखी विकास तभी हो सकता है जब वह बच्चे की शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियों की तालीम के साथ साथ होता है।''

–महात्मा गांधी

गिजुभाई की 'एकल शिक्षक पद्धति की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता'

– अस्मा

शिक्षक ही बालक को क्रियाशील, कल्पनाशील और प्रयोगशील बनाता है। एक शिक्षक का कार्य एक माली से भी बढ़कर है क्योंकि उसे वृक्ष से पहले बीज के दोषों को दूर करके केवल उसे अनुकूल वातावरण ही उपलब्ध नहीं कराना होता है बल्कि सामाजिक तथा नैतिक वातावरण में सम्माननीय जीवन जीने के योग्य बनाकर एक प्रेरक, दृष्टा और अवलोकनकर्ता तीनों का कार्य कुशलता के साथ करना आवश्यक होता है। इस कार्य में एकल शिक्षक पद्धति एक स्तम्भ का कार्य कर सकती है।

बाल–केंद्रित शिक्षा के प्रणेता गिरिजा शंकर भगवान जी बधेका ने शिक्षा के क्षेत्र में गिजुभाई के नाम से ख्याति प्राप्त की। इन्होंने बाल शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयोगों में अपना जीवन समर्पित करने के साथ–साथ अध्यापकों के प्रशिक्षण के नए कार्यक्रमों का उन्मेष किया और प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक तथा शिक्षार्थी सभी को संज्ञान में रखकर कई शिक्षण–पद्धतियों पर शोध किया। उनके द्वारा प्रतिपादित बालशिक्षा के लिए 'एकल शिक्षक पद्धति' या 'सतत शिक्षक पद्धति' वर्तमान प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षकों में एक नवीन दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकती हैं जो शिक्षा को एक मजबूत नींव देकर उसे बोझिल होने से रोकेगी। इस प्रकार कुंठित होते जा रहे वर्तमान शिक्षक समुदाय में नवीन शैक्षिक प्रयोगों के माध्यम से नवीन उत्साह भरने की आवश्यकता है। गिजुभाई ने सुन्दर और खुशहाल राष्ट्र की कल्पना के लिए बाल–सम्मान के महत्व को स्वीकारते हुए उनमें शिक्षा के प्रति जिज्ञासा, उत्साह, निडरता और मित्रता जैसे गुणों के समावेश को आवश्यक बताया है। गिजुभाई द्वारा उन्मेषित 'एकल शिक्षा पद्धति' प्राथमिक स्तर के शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए एक प्रगतिशील कदम है। यह पद्धति नई कक्षा में उत्सुकता और शिक्षकों में स्फूर्ति उत्पन्न करके उनकी ज्ञान शक्ति में अभिवृद्धि कर सकती है। एकल शिक्षक पद्धति को वर्तमान की शिक्षा परिस्थितियों में प्राथमिक स्तर पर लागू करके ट्यूशन जैसी मुसीबत से भी शिक्षार्थियों और शिक्षकों को बाहर निकाला जा सकता है।

गिजुभाई मानते हैं कि इस शिक्षक पद्धति द्वारा बाल्यकाल का निर्माण उसी प्रकार होता है जिस प्रकार कुम्हार कच्ची मिट्टी को एक सुंदर स्वरूप देकर उपयोगी वस्तु का निर्माण करता है। इन्होंने एकल शिक्षक पद्धति में प्राथमिक स्तर पर अनेक शिक्षकों की तुलना में एक ही शिक्षक द्वारा शिक्षण की प्रक्रिया को चलाना अधिक महत्ववपूर्ण माना है। यह पद्धति शिक्षक को शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत शक्ति और उनकी विषय में रूचि–अरूचि से अवगत कराएगी, साथ ही पाठ्यक्रम की उपयुक्तता, अनुपयुक्तता अर्थात् पाठ्यक्रम के निरर्थक विषयों की जानकारी भी देगी। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम प्राप्त अवधि की तुलना में पर्याप्त है अथवा

कम इसका ज्ञान भी शिक्षक प्राप्त कर सकेंगे और पाठ्यपुस्तकों के क्रमिक होने का ज्ञान होने से शिक्षक पाठ्यपुस्तकों में उचित सुधार का सुझाव भी दे सकेंगे।

एकल शिक्षक पद्धति में एक शिक्षक ही प्रथम कक्षा से चौथी–पाँचवी कक्षा तक शिक्षण कार्य करते हुए शिक्षार्थियों का चहुँमुखी विकास करता है जिससे प्रत्येक विषय की निरंतरता बनी रहती है। शिक्षक को शिक्षण कार्य के लिए लंबा समय मिलने के कारण वह अपनी शिक्षण विधियों में नए–नए प्रयोग करके सुधार कर सकता है जिससे शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों के ज्ञान और शक्ति में पर्याप्त वृद्धि होने से शिक्षण प्रक्रिया रूचिकर बन जाती है और प्रत्येक शिक्षार्थी अपनी सामर्थ्य के अनुसार अवसर उपलब्ध होने के कारण अपने लक्ष्य को तीव्र या मंद गति से प्राप्त करने का प्रयास करता है क्योंकि शिक्षक प्रत्येक शिक्षार्थी को आगे बढ़ने के लिए समान अवसर देता है।

एकल शिक्षक पद्धति में 'एकल शिक्षक' का अर्थ है – शिशु कक्षा से चौथी–पाँचवी कक्षा तक उन्हीं शिक्षार्थियों को चार–पाँच वर्षों तक सभी विषयों को पढ़ाने वाला शिक्षक और इन चार–पाँच वर्षों का कार्य पूरा करके शिक्षक का फिर पहली कक्षा में लौट आना। अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों में 'कक्षा–शिक्षण पद्धति' को अपनाया गया है जिसमें एक शिक्षक, एक ही कक्षा को सभी विषय पढ़ाकर वर्ष के अंत में परीक्षा द्वारा उनका मूल्याँकन करता है और फिर शिक्षार्थी अगली कक्षा में चले जाते हैं, शिक्षक वहीं रह जाता है। उसके सामने एक नई कक्षा आती है, ऐसे शिक्षार्थी जिनके ज्ञान, क्षमताओं, योग्यता के बारे में उसे कुछ मालूम नहीं होता। जिन शिक्षार्थियों को वह वर्ष भर में जान पाता है वे नए शिक्षक के समान होती है। लेकिन अगली कक्षा में गए शिक्षार्थियों के लिए भी नए शिक्षक को न जानने के कारण असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

'विषय–शिक्षक पद्धति' अधिकतर माध्यमिक कक्षाओं में चलती है, जिसमें एक ही कक्षा को अलग–अलग विषयों के शिक्षक पढ़ाते हैं लेकिन समस्या तो वही है नई कक्षा में नया शिक्षका।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को कई शिक्षकों की तुलना में एक ही शिक्षक को समझने और उसके लम्बे परिचय की आवश्यकता होती है तभी शिक्षक और शिक्षार्थी एक–दूसरे को जान पाएँगे और जब उनके बीच कोई झिझक नहीं होगी तभी वे अच्छा सीख और सिखा पाएँगे।

वर्तमान में कुछ प्राथमिक विद्यालयों में एक ही शिक्षक प्रथम कक्षा से पाँचवी कक्षा तक शिक्षार्थियों के संपर्क में तो रहते हैं लेकिन उनका उद्देश्य केवल प्रतिदिन की शिक्षार्थियों की उपस्थिति का विवरण रखना होता है। वह शिक्षण कार्य नहीं कर पाते है क्योंकि उसके पास शिक्षण के लिए समय ही नहीं बचता है जिसके कारण शिक्षक और शिक्षार्थियों के बीच कोई

'शिक्षण–अधिगम अंतः क्रिया' नही हो पाती है। इस प्रकार समस्या वहीं की वहीं रह जाती है।

बाल्यकाल निर्माण की अवस्था है इस अवस्था में यह आवश्यक होता है कि शिक्षार्थी की ज़रूरतों, सीखने के तरीकों को सावधानी से समझा जाए। निरंतर एक शिक्षक के संपर्क में आने पर यह संभव हो सकता।

दूसरी ओर, यदि एकल शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य कराया जाएगा तो वह बालकों को अच्छी तरह जान जाएगा कि जब बालक पहली कक्षा में आया था तो कैसा था? और पाँचवी कक्षा तक उसमें क्या परिवर्तन आए तथा उसके अन्दर कौन–सी पूर्व–योग्यताएँ, क्षमताएँ और रूचियाँ विद्यामान हैं, वह भविष्य में किस क्षेत्र में प्रगति कर सकता है इत्यादि। एकल शिक्षक बालक के लिए विकास मार्ग को निर्मित करके उसे उचित दिशा–निर्देश दे सकता है जिससे बालक को आगे बढ़ने में आसानी होगी।

वर्तमान कक्षा–शिक्षण में यदि किसी शिक्षार्थी को कोई विषय समझ नहीं आ रहा है या शिक्षार्थी की उस विषय में रूचि नहीं है, फिर भी अगली कक्षा में उसे उस विषय को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ना पड़ेगा, फिर चाहे वह फेल ही क्यों न हो जाए। क्योंकि अगली कक्षा में उसे नया शिक्षक मिलेगा जो शिक्षार्थी की रूचि के बारे कुछ भी नहीं जानता है। लेकिन यदि एकल शिक्षक या सतत–शिक्षक, शिक्षण कार्य संभालता है तो उसे शिक्षार्थी के बारे में पूर्ण जानकारी होगी जिसके कारण वह बता सकता है कि अमुक शिक्षार्थी की किस विषय में रूचि नही है। अतः उस शिक्षार्थी को वह विषय न पढ़ाया जाए। इसके लिए पाठ्यक्रम को लचीला बनाया जाना चाहिए तभी वास्तव में एकल शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों की परेशानी को कम किया जा सकता है और इस अरूचिकार विषय को छोड़कर बालक अपनी रूचि के विषय को चुन सकेगा।

दूसरी ओर, शिक्षक को नए आए शिक्षार्थियों को पढ़ाने में मज़ा नहीं आता है, क्योंकि शिक्षार्थी भले ही नए होते हैं, लेकिन शिक्षक के लिए विषय वही पुराने, जो वह वर्षों से पढ़ाता चला आ रहा है। उसे कुछ भी पढ़ाने के लिए नया नहीं मिलता है। वह सिर्फ़ रोज़ का काम निपटाता है। कक्षा में उसे बौद्धिक आनंद नहीं मिलता है जिसके कारण शिक्षक, कक्षा में अपनी प्रतिभा और कुशलता का प्रदर्शन भी नहीं कर पाता है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षार्थियों की अभिलाषा तथा उत्सुकता पूरी नहीं हो पाती हैं। वे निस्तेज और रसहीन हो जाते हैं तथा उनका उद्देश्य सिर्फ परीक्षा पास करना बन जाता है। नए प्रयोग करना या सीखना नही। वे विद्यालय से भाग निकलने के लिए तैयार रहते हैं क्योंकि न तो उन्हें कक्षा अच्छी लगती है और न ही शिक्षक। ऐसी वर्तमान शिक्षण–पद्धति में शिक्षक, शिक्षार्थी के क्रमिक विकास और ज्ञान वृद्धि के साथ कोई संबंध नहीं रखता है क्योंकि जो शिक्षक शिक्षार्थियों को पहले से जानता नहीं है वह उनके ज्ञान और क्षमताओं का विकास कैसे कर सकता है? ऐसी स्थिति में शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों शुरू से अंत तक उलझे रहते हैं।

जबकि यदि एकल शिक्षक पद्धति को वर्तमान में प्रयोग किया जाए तो शिक्षक को हर दिन नया पढ़ने और पढ़ाने को मिलेगा। वह पढ़ाने में रूचि लेगा। वह शिक्षार्थियों की उत्सुकता को पूरा करके उनमें नया सीखने के लिए प्रेरणा भरेगा। वह उनके चारित्रिक, मानसिक और शारीरिक विकास को एक नई दिशा दे सकता है। एकल शिक्षक, शिक्षार्थियों को पर्याप्त समय देता है, उन्हें पहचानता है जो एक सच्चे शिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण होते हैं। शिक्षक और शिक्षार्थियों के लंबे समय तक साथ रहने के कारण शिक्षार्थी विश्वासर्पूक अपने हृदय को खोल देते हैं और अपने विकास में स्वयं सहयोग देने लगते हैं। शिक्षार्थी, शिक्षक से कुछ पूछने या बताने में झिझकते नहीं है और दोनों के बीच पिता–पुत्र जैसा संबध बन जाता है। यही संबंध प्राचीनकाल में गुरूकुलों में बनते थे जिससे शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। इसी स्नेह–बंधन के कारण गुरूकुलों में अनुशासन रहता था।

वर्तमान समय में प्राथमिक विद्यालयों में अनुशासनहीनता एक बड़ी समस्या बन गई है। 'एकल शिक्षक पद्धति' द्वारा वर्तमान प्राथमिक कक्षाओं में अनुशासन सफलतापूर्वक स्थापित किया जा सकता हैं। वर्तमान शिक्षण पद्धति में हर वर्ष पाठ्यपुस्तकों के बदलने के साथ–साथ शिक्षक भी बदल जाते हैं। पूर्व–कक्षा का प्रारंभिक ज्ञान वही रह जाता है और नई कक्षा में नए शिक्षक द्वारा पाठ्यपुस्तकों के अनुसार नए ज्ञान का प्रबंध किया जाता है। जिससे शिक्षक, शिक्षण की निरंतरता को कायम नहीं रख पाते और शिक्षण कार्य एक नए सिरे से शुरू किया जाता है। परंतु एकल शिक्षक पद्धति में शिक्षक, शिक्षण की निरंतरता और उसकी रोचकता बनाये रख सकता है। जैसे–यदि शिक्षक को भारत का पूरा भूगोल पढ़ाना है तो वह चार–पाँच वर्षों के विषय संकलन के हिसाब से उसे विभाजित करकें, बच्चों की योग्यताओं को ध्यान में रखकर रोचक विधि से, पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ते हुए पढ़ाएगा जिससे शिक्षार्थियों को भूगोल का क्रमिक रूप से ज्ञान प्राप्त होगा और उनमें नया जानने की उत्सुकता तथा रोचकता उत्पन्न होगी। इस प्रकार सतत शिक्षण में पढ़ने और पढ़ाने में आनंद आएगा और शिक्षक तथा शिक्षार्थी सीखने–सिखाने की राह पर निरंतर अग्रसर रहेंगे।

एकल शिक्षक जब चार–पाँच वर्षों के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम को लगातार पढ़ाएगा तो वह बता सकता है कि पाठयक्रम के निरर्थक विषय कौन से हैं और लगातार पूरी अवधि में वह पाठ्यक्रम पूरा हो सकता है या नहीं। वह पाठ्यपुस्तकों के सही क्रम तथा उसके स्तर का ज्ञान अनुभव के आधार पर तुलना करके प्राप्त कर लेगा जिससे वह पाठ्यपुस्तकों को बच्चों की ज्ञान शक्ति के अनुसार नए क्रम में संजोकर प्रारंभ में उनके न समझने योग्य बातों को अगली कक्षा के पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित कर देगा। यदि एकल शिक्षक को अवसर दिया जाएगा तो वह पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन का सुझाव भी दे सकता है।

एकल शिक्षक पर पाँच वर्षों के शिक्षण की पूरी जिम्मेदारी होने से वह बेहतर काम करेगा। पाँच वर्षों की लम्बी अवधि शिक्षक को मिलने के कारण वह अलग–अलग विषयों को रोचक तरीके से, अपनी शिक्षण विधियों में सुधार करके शिक्षार्थियों को पढ़ाएगा क्योंकि पाँच वर्षों के अंत में उसे परिणाम प्रस्तुत करना होता है। लेकिन वह शिक्षार्थियों का 'सतत मूल्यांकन' स्वयं

के निर्धारित समय पर शिक्षार्थियों के अधिगम के आधार पर करता रहता है। अतः एकल शिक्षक पढ़ाने की प्रभावशाली विधियों को खोजेगा ताकि उसे और शिक्षार्थियों को पढ़ने–पढाने में मजा आए। शिक्षक को अधिक समय मिलने के कारण स्वयं की शिक्षण गलतियों को सुधारने का अवसर भी मिलेगा जिससे उसमें विश्वास और हिम्मत तथा नई शक्ति का संचार हो सकेगा, जिनकी प्राथमिक स्तर पर सबसे अधिक आवश्यकता होती है और शिक्षक, शिक्षण में नए–नए प्रयोग कर सकेगा।

एकल शिक्षक ही प्रत्येक शिक्षार्थी के स्वभाव तथा उसकी ज्ञान शक्ति को जान सकता है। वह कमज़ोर, सामान्य और प्रतिभाशाली शिक्षार्थी को अपनी सामर्थ्य के अनुसार सीखने के अवसर देगा क्योंकि उसे अनुभव द्वारा बालक से सीखने की गति और प्रत्येक की क्षमताओं का ज्ञान होने से वह एक ही पद्धति से सबको नहीं पढ़ाएगा और इस प्रकार कमज़ोर शिक्षार्थी भी अधिगम के लक्ष्य तक पहुँच जाएगा। एकल शिक्षक शिक्षार्थी की कमियों को सुधार कर उन्हें विकास मार्ग पर आगे बढ़ने के अवसर देगा, सजा नहीं।

वर्तमान कक्षा में शिक्षकों को पढ़ाने में आनंद नहीं आता, शिक्षार्थी भी रूचि नहीं लेते लेकिन उन्हें परीक्षा तो पास करनी ही होती है। इसलिए उन्होंने माता–पिता के साथ मिलकर ट्यूशन की खोज की है। शिक्षक अतिरिक्त धन के लालच में कक्षा में न पढ़ाकर ट्यूशन में पढ़ाना पसंद करता है। जितने मूर्ख शिक्षार्थियों की कक्षा होगी उतने ही ट्यूशन के लिए शिक्षार्थी उसे मिल जाते हैं। वह मनोवृति बना लेता है कि कक्षा में नहीं पढ़ाऊँगा तो चलेगा, ट्यूशन में पढ़ा दूँगा। लेकिन एकल शिक्षक पद्धति द्वारा ट्यूशन की मुसीबत को भी प्राथमिक स्तर पर काफी हद तक रोका जा सकता है। क्योंकि एकल शिक्षक पर पाँच वर्षों के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के परिणामों की जिम्मेदारी होगी जिसके आधार पर उसे पदोन्नति के अवसर प्राप्त होंगे, तो वह अपनी प्रतिभा और समय को कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने में लगाएगा।

प्राथमिक स्तर पर यदि एकल शिक्षक पद्वति को लागू किया जाए तो एकल शिक्षक के सामने रोज़ नया–नया जानने और विचारने के कारण उसमें स्फूर्ति रहेगी। वह संतुष्टि का अनुभव करेगा। वही के वही शिक्षार्थी होने से भी वह ऊबेगा नहीं, बल्कि उस माली के समान आनंद का अनुभव करेगा जो स्वयं के उगाए पौधों को रोज़ बढ़ते हुए देखकर आनंदित होता है। अतः प्राथमिक स्तर पर 'एकल शिक्षक पद्धति' शिक्षण में नवीन दृष्टिकोण उत्पन्न कर सकती है जो शिक्षा को एक मजबूत आधार देगा।

वर्तमान प्राथमिक स्तर पर एकल शिक्षक पद्वति को लागू करने में कुछ मुश्किलें भी हैं जिन्हें मिलकर दूर करके बहुत अधिक मात्रा में इस पद्धति का लाभ लिया जा सकता है। पहली मुश्किल यह है कि प्रथम कक्षा से पाँचवी कक्षा तक पढ़ाने के लिए शिक्षकों में योग्यता नहीं है, साथ ही उनका वेतन भी इस शिक्षण कार्य के हिसाब से कम है। यदि शिक्षक को योग्यता बढ़ाने का अवसर दिया जाए या योग्य शिक्षकों की तैनाती की जाए और उनके वेतन में भी आवश्यक वृद्धि हो जाए और पाँच वर्ष के उनके शिक्षण कार्य के मूल्यांकन के आधार पर पदोन्नति दी जाए तो शिक्षकों को 'एकल शिक्षक पद्धति' से परहेज नहीं होगा।

दूसरी मुश्किल कक्षा में शिक्षार्थियों की अधिक संख्या है। लेकिन यदि कक्षा को आधा कर दिया जाए तो 'एकल शिक्षक पद्धति' से अधिकतम लाभ मिल सकता है। भले ही छोटी कक्षा पर एक शिक्षक रखने से अधिक खर्च होगा लेकिन यदि शिक्षक की नियुक्ति अच्छी पढ़ाई की दृष्टि से की जाए और आर्थिक व्यय की तुलना में 'एकल शिक्षक पद्धति' से होने वाले लाभ का प्रश्न महत्वपूर्ण हो तो अधिक व्यय भी भारी नहीं लगेगा। मेरी दृष्टि में आर्थिक व्यय की तुलना में प्राथमिक शिक्षा में सुधार के स्तर पर मिलने वाला लाभ महत्वपूर्ण होना चाहिए। तभी वास्तव में शिक्षा के स्तर में सुधार आ सकता है।

तीसरी मुश्किल कक्षा के बीच में प्रवेश लेने वाले शिक्षार्थियों की है, उन्हें 'एकल शिक्षक पद्धति' वाली कक्षा में प्रवेश नहीं दिया जा सकता क्योंकि ऐसी स्थिति में न तो एकल शिक्षक ही उन्हें समझा पाएगा और न ही शिक्षार्थी कक्षा में व्यवस्थित महसूस करेंगे। यदि उन्हें बीच में प्रवेश दिया गया तो ''लम्बे बाँस पर अगर ठिगना चढ़ेगा ातो मरेगा या फिर बीमार पड़ेगा'' जैसी कहावत को साकार करने जैसा होगा। ऐसे शिक्षार्थियों के लिए एक अलग फुटकर विभाग रखा जा सकता है। भले ही रखे जाने वाले शिक्षकों का खर्चा बढ़ेगा लेकिन हमें उस व्यय से ज्यादा 'एकल शिक्षक पद्धति' से मिलने वाले लाभ को देखना होगा।

दूसरी ओर प्राथमिक शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में भी परिवर्तन की आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षकों का चयन केवल लिखित परीक्षा के आधार पर न किया जाए बल्कि 'शिक्षक चयन प्रक्रिया' में वास्तविक कक्षा में शिक्षण अधिगम के अवलोकन को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। साथ ही शिक्षक, शिक्षण–कार्य केवल अपना व्यवसाय समझ कर न करें बल्कि अपनी जिम्मेदारी समझें। उन्हें इस बात का आभास होना चाहिए कि वे देश के भविष्य का निर्माण कर रहे हैं केवल शिक्षण नहीं।

यदि एकल शिक्षक को अपने कार्य में स्वतंत्रता और मार्गदर्शन दिया जाए तथा प्रेरित किया जाए, उसका वेतन आकर्षक हो, उस पर विश्वास जताया जाए, माता–पिता का सहयोग प्राप्त हो तो शिक्षक पूर्ण निष्ठा से अपना शिक्षण कार्य पूरा कर सकता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा अधिकारियों तथा शिक्षा विभाग द्वारा समय–समय पर प्राथमिक शिक्षकों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए तो एकल शिक्षक को प्रोत्साहन प्राप्त होगा और वह शिक्षण की इस पद्धति में रूचि लेगा।

यदि प्राथमिक विद्यालयों में परीक्षकों की संख्या कम करके एकल शिक्षक और सहयोगी निरीक्षकों को तैनाती दी जाए और विद्यालय में एकल शिक्षक पद्धति से काम शुरू करने में कल्पनाशील शिक्षा अधिकारी का सहयोग प्राप्त करके शुरूआत की जाए तो इस पद्धति से होने वाले लाभों को साकार किया जा सकता है।

संदर्भ

1. दबे, दीनानाथ 2001, प्राथमिक विद्यालय की शिक्षण पद्धतियाँ. गीतांजली प्रकाशन, जयपुर।
2. दबे, रमेश. 2008, शिक्षा–सोचना या सूचना, शिवम् प्रकाशन, इलाहाबाद।
3. बधेका, गिजुभाई 2004, ऐसे हों शिक्षक, गीतांजली प्रकाशन, जयपुर।

हमारे लेखक

रचना राठौड़
सह आचार्य
लोकमान्य तिलक
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
सी.ई.टी. उदयपुर
राजस्थान

एकता पांडेय
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
ओरिएण्टल विश्वविद्यालय
इंदौर
मध्य प्रदेश

हरे कृष्ण
विभागाध्यक्ष
बी.एड.
पार्वती विज्ञान महाविद्यालय
मधेपुरा
बिहार

सबा
अलिगंज पश्चिम
रोड़ नं. 22
कटारी हिल रोड
गया
बिहार–823 001

शैलजा मिश्रा
शिक्षक शिक्षा विभाग
एस.एस. कॉलेज
शाजहांपुर
उत्तर प्रदेश

अस्मा
शिक्षा संकाय
कुमाऊँ विश्वविद्यालय
एस.एस.जे. परिसर
अल्मोडा
उत्तराखण्ड

PROUDH SHIKSHA

Form IV

1.	Place of Publication	Indian Adult Education Association 17-B, Indraprastha Estate New Delhi – 110 002
2.	Periodicity of Publication	Biannual
3.	Printer's name Nationality Address	Dr. Madan Singh Indian 17-B, Indraprastha Estate New Delhi – 110 002
4.	Publisher's name Nationality Address	Dr. Madan Singh Indian 17-B, Indraprastha Estate New Delhi – 110 002
5.	Editor's name Nationality Address	Dr. Madan Singh Indian 17-B, Indraprastha Estate New Delhi – 110 002
6.	Name and address of individuals who own the newspaper and partners or shareholders, holding more than one percent of the total capital	Indian Adult Education Association 17-B, Indraprastha Estate New Delhi – 110 002

I, Dr. Madan Singh, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated: 28-2-2021

Sd/-
Dr. Madan Singh
Publisher

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
कार्यकारिणी समिति

अध्यक्ष
डा. एल. राजा

बहिर्गामी अध्यक्ष
श्री कैलााश चौधरी

उपाध्यक्ष
श्रीमती राजश्री बिस्वास
प्रो. सरोज गर्ग
प्रो. राजेश
प्रो. एस. वाई. शाह

महासचिव
श्री सुरेश खण्डेलवाल

कोषाध्यक्ष
डा. पी. ए. रेड्डी

संयुक्त सचिव
श्री मृणाल पन्त

सह–सचिव
डा. डी. उमा देवी
श्री राजेन्द्र जोशी
श्री ए. एच. खान
श्री हरीश कुमार एस.

सदस्य
सुश्री निशात फारूख
डा. आशा आर पाटिल
डा. आशा वर्मा
श्री वी बालासुब्रमनियण
श्री वाई एम जनानी
श्री वाई. एन. शंकरेगोडा
डा. वी. रेघु

सहयोजित सदस्य
प्रो. अशोक भटट्ाचार्य
श्रीमती इन्दिरा राजपुरोहित
डा. डी. के. वर्मा

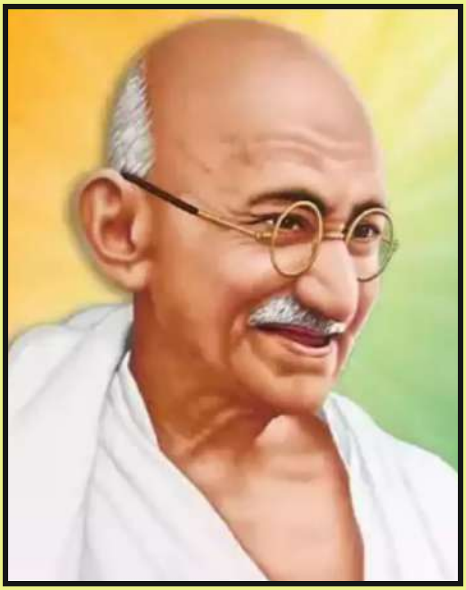

"मैंने कतई उद्योग को विकसित करने के लिए किसी भी अन्य पोशक उद्योग को त्यागने की कल्पना तक नहीं की है। हिंदुस्तान में करोड़ों लोग बेरोजगार रहते हैं, इसी आधार पर चरखे का प्रचार–प्रसार आरंभ किया गया है। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि जिस दिन भारत में ऐसे बेरोजगार लोग नहीं रहेंगे, उस दिन इस देश में चरखे के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा। ..... मैं जो मध्यम वर्ग के लोगों से यज्ञार्थ चरखा चलाने के लिए कहता हूं, वह भी बचे हुए समय में ही। चरखे के प्रवृत्ति किसी उद्योग की विनाशक नहीं, बल्कि पोशक प्रवृत्ति है। इसलिए मैंने उसे अन्नपूर्णा की उपमा दी है।"

–महात्मा गांधी